NEHRU
BAL PUSTAKALAYA

आओ, नाटक खेलें

उमा आनंद



नेहरू बाल पुस्तकालय

आओ, नाटक खेलें

उमा आनंद

चित्रकार

मिकी पटेल

अनुवादक

बलराज पंडित



नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ISBN 81-237-0843-2

पहला संस्करण 1971
बारहवीं आवृत्ति 1994 (शक 1915)

Let's Do a Play (Hindi)

रू० 8.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5 ग्रीन पार्क,
नयी दिल्ली-110016 द्वारा प्रकाशित



जादुई सीटी

दीपक धूप में लेटा हुआ कामिक पढ़ रहा था। यह स्कूल के सत्र का आखिरी दिन था। उसने यह नया कामिक अपने पड़ोसी दोस्त से बदले में लिया था। माँ काम से पाँच बजे लौटती थीं। वह माँ के आने से पहले ही कामिक खत्म कर लेना चाहता था। माँ को यह बिल्कुल पसंद नहीं था कि वह कामिक पढ़-पढ़ कर अपनी छुट्टियाँ बरबाद करे।

"पीऽ . . . पीऽ . . . पीऽ . . . ।" बाँसुरी जैसी एक अजीब-सी तेज़ आवाज़ सुनकर दीपक उठ बैठा।

"पीऽ . . . पीऽ . . . पीऽ . . . ।" आवाज़ दुबारा सुनायी दी। दीपक झपट कर उठा और दौड़कर फाटक तक आया। फाटक एक सँकरी गली में खुलता था।



उसने देखा कि वहीं मोड़ पर डरावनी मूंछों और चमकती आँखों वाला एक लंबा-काला आदमी खड़ा है और उसको देख कर मुस्करा रहा है। ढीली-ढाली पगड़ी थी। सफेद धोती पर लाल रंग का लंबा कुरता पहने था। कानों में सोने की चमचमाती बालियाँ थीं। पीठ पर भारी गठरी थी। उसके साथ लगभग वैसी ही पोशाक पहने एक लड़का और एक बच्चा था। बच्चे ने हरी पगड़ी बाँधी हुई थी।

"पीऽ . . . पीऽ . . . पीऽ . . .।" लंबे-काले आदमी ने सीटी फिर बजायी। दीपक को लगा कि उसके मुँह में किसी किस्म की सीटी लगी हुई है।

अचानक ही दीपक मुड़ा और उस नीची झाड़ के पास आया जो उसके बाग और पड़ोस के अहाते को अलग करती थी।

"डीडो !" वह ज़ोर से चिल्लाया, "कहाँ हो ? बाहर आओ, जल्दी !"

"आया," कहता हुआ इकहरे बदन का एक लंबा लड़का बाहर आ गया। यह रफ़ीक़ था, दीपक का सबसे पक्का दोस्त जिसे सभी डीडो कह कर बुलाते थे।

"मैं भी आयी," एक दूसरी महीन पैनी आवाज़ आयी और एक घुंघराले बालोंवाली, हृष्ट-पुष्ट और सुंदर लड़की बाहर आ गयी। मुस्कराते समय उसके गालों में गड्ढे पड़ जाते थे।

"मैंने तुम्हें तो नहीं बुलाया, पारो," दीपक ने मुँह बना कर कहा।

यह सुनते ही छोटी लड़की की मुस्कराहट भक् से उड़ गयी। यह परवीन थी, रफ़ीक़ की छोटी बहन और प्रशंसक। थी तो वह दस ही साल की लेकिन उसका भाई रफ़ीक़ जो काम करता उसे वह खुद भी करना चाहती थी। रफ़ीक़ और दीपक दोनों की उम्र बारह साल से कुछ अधिक थी। दीपक पारो (घर में परवीन को इसी नाम से पुकारा जाता था।) का संग-साथ बिल्कुल पसंद नहीं करता था क्योंकि उसके साथ होने से मज़ा बिगड़ जाता था।

"इसको छोड़ो," डीडो ने कहा, "यह बताओ कि मुझे किसलिए बुलाया है ?"

"गली में एक कठपुतलीवाला आया है। वह गली में ही अपना सामान लगा रहा है। आओ तमाशा देखें। देखें वह क्या करता है।"



'मैं भी. . .मैं. . .,'' सीटी की-सी आवाज़ में बोलता एक गोल-मटोल लड़क पारो के पीछे-पीछे दौड़ने लगा।

''देखो, तुमने क्या किया,'' दीपक चिल्लाया, ''अब टप्पो को भी साथ ले चलना पड़ेगा।''

''आओ, फिर सभी चलते हैं,'' डीडो ने कहा, ''मेरा हाथ पकड़ लो, पारो।''

''आओ, टप्पो मेरी पीठ पर चढ़ जाओ,'' दीपक ने बेमन से कहा और उसने पाँच वर्षीय टप्पो को आसानी से पीठ पर लाद लिया।

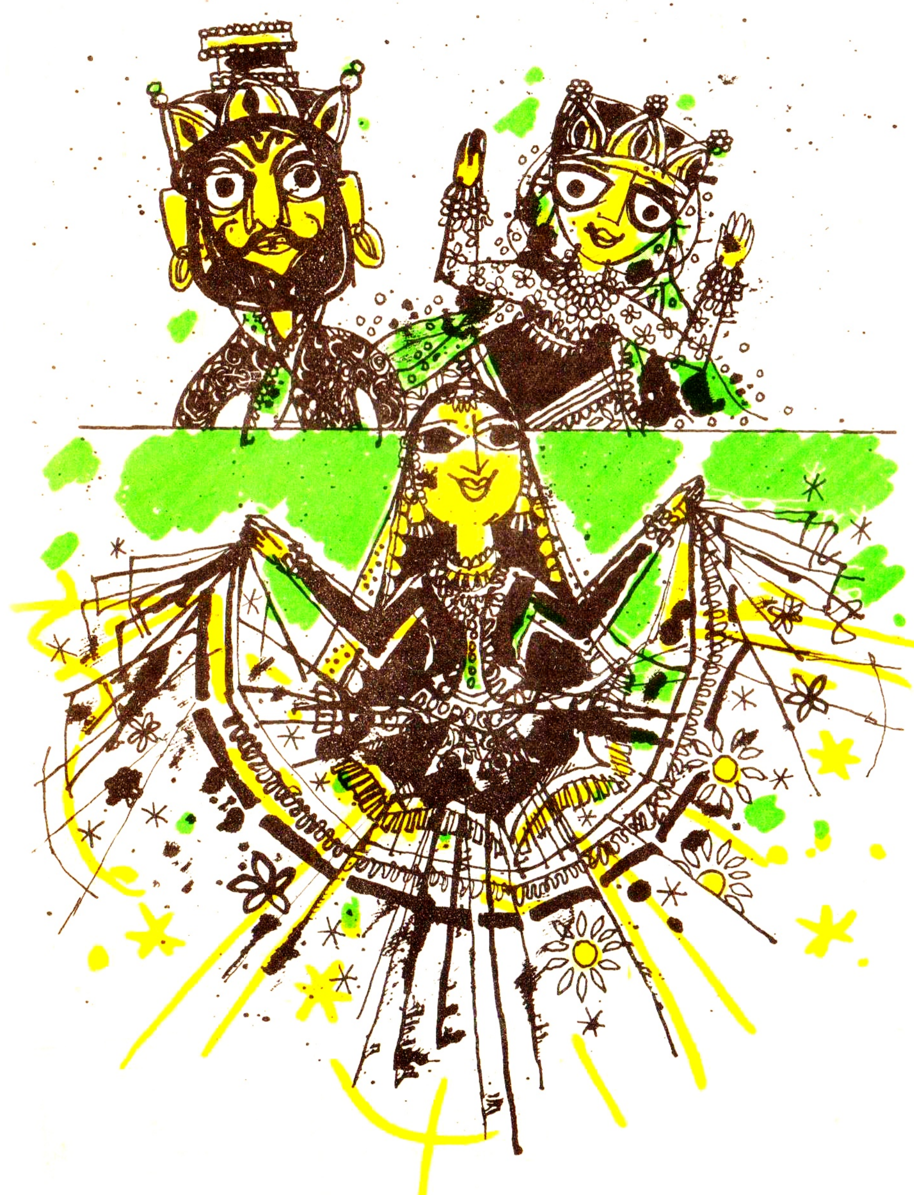
बच्चे जल्दी ही बाज़ारवाले चौक के सामने मैदान में आ गये। वहाँ पहले से ही काफी भीड़ इकट्ठी हो चुकी थी।

''पीs . . . पीs . . . पीs. . .।'' कठपुतलीवाले की आवाज़ आयी। ''ढम् . . . टा . . . टा . . . ढम् . . .।'' लड़का ढोलक बजा रहा था।

बच्चे भीड़ को चीरते हुए आगे आकर बैठ गये। कठपुतलीवाले के मंच का आकार छोटे संदूक की तरह था। वह मंच के पीछे खड़ा उँगलियों में लिपटे धागों की सहायता से कठपुतलियों को चला रहा था। इन धागों के दूसरे सिरे कठपुतलियों से बँधे हुए थे।

मंच पर दरबार का दृश्य खेला जा रहा था। राजा अमरसिंह राठौर और उसकी पत्नी हाड़ी रानी एक छज्जे पर बैठे हुए थे। उनकी पोशाकें सुंदर थीं। राणा की मूँछें कठपुतलीवाले की तरह ही डरावनी थीं। उसके कानों में छोटी-छोटी बालियाँ थीं। सिर पर मुकुट था। रानी की पोशाक सुनहरी थी। उसके गले में चमकदार नगों की माला थी। नीचे राजनर्तकी नाच रही थी। कठपुतलीवाला उसे बड़ी कुशलता से घुमा रहा था। नाचते समय कठ-पुतली तेज़ी से चक्कर खाती और उसका घाघरा हवा में लहरा उठता।

''पी . . .पी . . .पी. . .'' सीटी फिर बजी। ''ढम् . . . टा . . . ढम् . . . टा।'' ढोलक की आवाज़ ऊँची हुई। फिर एक मदारी मंच पर आया। उसने बीन बजाते हुए अपनी पिटारी में से एक साँप निकाला। उसे देखते ही चितकबरा कुत्ता एक दम डर गया। तभी एक दूत आया। उसने बताया कि दुश्मन हमला



कर रहा है! सुनते ही अमरसिंह राठौर खड़ा हो गया और म्यान से तलवार खींची। वह काले घोड़े पर सवार हुआ और घोड़ा दौड़ाता हुआ निकल गया।

दृश्य बदला। अब युद्ध का दृश्य था। काले घोड़े पर सवार अमरसिंह राठौर लाल घोड़े पर सवार अपने शत्रु से लड़ रहा था। घोड़े एक दूसरे से भिड़े। सूरमाओं की तलवारें आपस में टकरायीं।

"ढम्-टा-टा-ढम्. . .ढम्-टा-टा-ढम्," ढोलक बज रही थी। "पीऽ . . . पीऽ · · · पीऽ . . . "बाँसुरी बज रही थी।

अमरसिंह राठौर जीत गया था। लाल घोड़े का सवार गिर कर मर गया था।

भीड़ ने खुशी से तालियाँ बजायीं। तभी हरी पगड़ीवाला छोटा बच्चा खड़ा हुआ और छोटी पिटारी हाथ में लेकर दर्शकों के पास आया। लोगों ने पिटारी में पैसे डाले।

"ओह!" दीपक निराश होकर बोला, "मेरे पास तो एक भी पैसा नहीं है। डीडो, तुम्हारे पास कुछ है?" रफ़ीक़ ने चुपचाप सिर हिला दिया।



उसके पास भी पैसे नहीं थे।

"मेरे पास पैसे हैं," पारो ने खुश होकर कहा और अपनी जेब से पच्चीस पैसे का सिक्का निकाल लिया।

"बहुत अच्छा। उसे दे दो," दीपक ने कहा। वह मन ही मन सोच रहा था कि लड़कियाँ भी कभी-कभी काम आ ही जाती हैं!

पारो ने सिक्का पिटारी में डाल दिया। वे भी बाकी दर्शकों की तरह वहाँ से चल पड़े।

"जल्दी चलो, दीपक," डीडो ने कहा, "घर के लोग चिंता कर रहे होंगे।" चारों गली की ओर तेज़ी से भागे।

"हम भी ऐसा ही तमाशा कर सकते हैं," दीपक ने दावे से कहा।

"हमारे पास कठपुतलियाँ कहाँ हैं?" डीडो ने शंका की।

"अरे बुद्धू, हमें कठपुतलियों की ज़रूरत ही नहीं है। उनका पार्ट हम खुद खेलेंगे," दीपक ने जवाब दिया, "मैं अमरसिंह राठौर बनूँगा।" यह कहते हुए उसने अपना हाथ हवा में यूँ फहराया मानो हाथ में तलवार हो। "यदि तुम



अमरसिह राठौर बनना चाहते हो तो बात दूसरी है," उसने डीडो से पूछा।

"अरे नहीं," डीडो ने जवाब दिया, "मैं तो हारा हुआ राजा बनना चाहूँगा। मरनेवाले सीन में तो और भी मज़ा आता है।" और अपनी आँखें चढ़ाकर बाँहें फैलाता हुआ वह ज़मीन पर इस तरीके से गिरा कि बच्चे खिलखिला कर हँस पड़े।

"मैं . . . मैं भी," चिल्लाता हुआ टप्पो भी डीडो पर गिर पड़ा।

"उठो, डीडो," पारो चिल्लायी। दीपक ने उठने की कोशिश करते हुए डीडो से टप्पो को खींचकर अलग किया। "दीपक, देखो, तुम्हारे घर के बाहर एक टैक्सी खड़ी है और माँ तुम्हें आवाज़ लगा रही है।"

"दीपक, कहाँ थे तुम ?" उत्सुक स्वर में माँ ने पूछा।

"चलो, अच्छा हुआ शरारती टप्पो भी यहीं है। मैं तो तुम लोगों को घर पर न पा कर परेशान हो गयी थी। शायद तुम भूल गये कि आज बंबई से प्रेम मामा आनेवाले हैं। यहाँ उनके स्वागत के लिए कोई भी नहीं था।" दीपक की माँ ने बच्चों को डाँटते हुए कहा।

"ग़लती हो गयी माँ ! मैं सचमुच भूल गया था। हम कठपुतली का तमाशा देखने चले गये थे।"

"मामा, माफ कर दीजिए," दीपक ने उस लंबे व्यक्ति से कहा जो टैक्सी से उतर रहा था और फिर बढ़कर उससे लिपट गया।

"कोई बात नहीं, बेटे ! कठपुतलीवाले सचमुच जादूगर होते हैं। तुम जैसे बच्चों को फुसला लेना उनके लिए बड़ी बात नहीं। यह है तुम्हारी बहिन, अनु।" टैक्सी से उतरती हुई एक सोलह वर्षीया लड़की की ओर इशारा करते हुए मामा ने कहा।

"नमस्ते, अनु दीदी। मैंने आपको पहचाना नहीं था," दीपक ने लजाते हुए कहा।

"लेकिन मैं तो तुम्हें पहचानती हूँ," अनु हँस कर उससे मिली।

"मैं भी. . . मैं भी . . ." टप्पो चिल्लाया।

"तुम भी लंगूर साहब," अनु ने उसे गोद में उठाते हुए कहा।

"सामान अंदर ले आओ, बच्चो !" दीपक की माँ ने कहा, "डीडो की अम्मी ने हम सब के लिए चाय तैयार कर रखी है।"

"हुर्रे !" खुशी से बच्चे चिल्लाये और संदूक तथा बिस्तर आदि उठाकर जल्दी से अंदर भागे।



परदा उठता है

पड़ोस के घर में बच्चे और बड़े इकट्ठे हुए। सब मेज़ के इर्द-गिर्द बैठे। घर की मालकिन श्रीमती अनवर एक हँसमुख और स्वस्थ महिला थीं। उनका चेहरा-मोहरा बेटी परवीन से इतना मिलता-जुलता था कि वह उसका बड़ा संस्करण लगती थीं। उन्होंने बच्चों को दूध दिया और बड़ों को चाय। बात-चीत के साथ-साथ गरमागरम जलेबियों और पकौड़ों के दौर भी चल रहे थे।

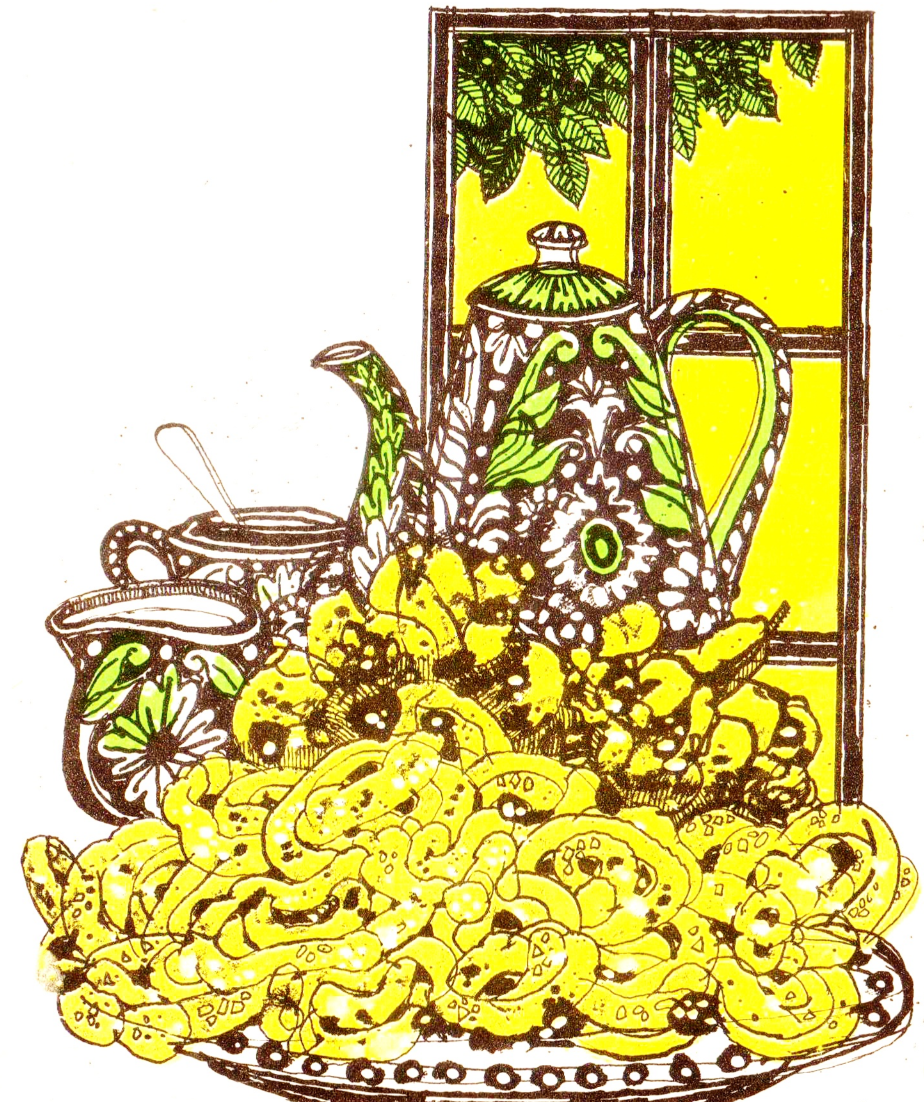
दीपक अपने मामा से मिलकर बहुत खुश हुआ। प्रेम मामा उसकी माँ के इकलौते भाई थे। वह अखिल भारतीय नाट्य समारोह में भाग लेने के लिए बंबई से अपनी मंडली के साथ आये थे। बीस सदस्यों की उनकी मंडली का नाम था 'हिंद मंच'। मंडली के अन्य सदस्य दूसरी मंडलियों के साथ होस्टल में ठहरे हुए थे। प्रेम मामा अपनी बेटी अनु के साथ अपनी बहन के घर ठहरने आ गये थे। अनु ने हाल ही में हायर सेकेंडरी की परीक्षा दी थी। नतीजा निकलने में काफी समय था। इसके बाद ही वह कालेज जा सकती थी। वह हिंद मंच द्वारा खेले जानेवाले दो नाटकों में से एक में भाग ले रही थी।

"आप कौन-सा नाटक करेंगे, मामा ?" दीपक ने पूछा।

"हम दो नाटक लेकर आये हैं, बेटे," मामा ने जबाब दिया, "एक तो एक भारतीय लेखक का लिखा नाटक है, 'तुग़लक'। यह एक महान भारतीय सुलतान के बारे में है।"

"पागल तुग़लक ?" डीडो ने पूछा। इतिहास में उसकी गहरी रुचि थी।

"हाँ, तुग़लक को पागल भी कहा जाता है और महान प्रतिभाशाली भी। नाटक में बताया गया है कि यह चतुर शासक कैसे अपने आखिरी दिनों में



क्रूर, अत्याचारी और लगभग पागल हो गया था।"

"और दूसरा नाटक ?" दीपक ने पूछा।

"दूसरा नाटक मेरा लिखा हुआ है। यह आजकल के जीवन की कामेडी है।"

"सचमुच बड़ा मज़ेदार है यह नाटक," अनु ने हँसते हुए कहा।

"और इसमें तुम्हारा पार्ट भी तो बढ़िया है," पिता ने कहा।

"तुम भी पार्ट कर रही हो अनु ?" दीपक को ईर्ष्या हो रही थी उससे।

"हाँ, यह भी कर रही है," मामा ने जवाब दिया, "और काफी अच्छा अभिनय कर रही है !"

"मैं भी अभिनेता बनना चाहता हूँ," दीपक ने कहा, "मामा, हिंद मंच का मैं अभिनेता नहीं बन सकता ?"

"इतनी जल्दी नहीं, बेटे। तुम्हें अभी स्कूल की पढ़ाई खत्म करनी है। जल्दी ही अनु कालेज में दाखिल होने वाली है और तभी वह तय करेगी कि वह अभिनेत्री, टीचर, पत्रकार या क्या बनना चाहती है। लेकिन क्या अपने पिता की तरह तुम पायलट नहीं बनना चाहोगे ?" उन्होंने पूछा।

श्रीमती अनवर ने दीपक की माँ पर एक उड़ती नज़र डाली और तेज़ी से बोलीं, "नहीं, बिल्कुल नहीं।" दीपक की माँ चुप रहीं। कमरे में एक बेचैन करने वाली चुप्पी छा गयी। बात यह थी कि दीपक के पिता फ़्लाइंग आफ़िसर अर्जुनदास वायुसेना के उन बहादुर पायलटों में से थे जिन्होंने कुछ वर्ष पहले देश की रक्षा के लिए जान की बाज़ी लगा दी थी। उनकी मृत्यु के बाद श्रीमती दास ने कन्या महाविद्यालय में पढ़ाना शुरू कर दिया था। जब वह कालेज में होतीं, उनका पड़ोसी अनवर परिवार उनके छोटे बच्चे टप्पो की देखभाल करता। अक्सर कालेज में देर हो जाती। ऐसे समय श्रीमती अनवर बच्चों का पूरा ख्याल रखतीं।

"पहले मैं पायलट बनना चाहता था लेकिन अब...अब मैं अभिनेता बनना चाहूँगा।" दीपक ने बातचीत जारी रखते हुए कहा, "अभी-अभी हम एक नाटक करने की सोच रहे थे...कठपुतलीवाले की तरह, और मुझे उसमें अमरसिंह

राठौर बनना था"

"और मैं ज़ख्मी सरदार," डीडो चिल्लाया और अपनी बाँहें फैला कर पसर गया। सभी हँस पड़े।

"मैं...मैं भी...," टप्पो ने डीडो की नकल उतारने की कोशिश की और ज़मीन पर लुढ़क गया।

"टप्पो, तुम सचमुच बहुत शरारती हो," ठहाकों के बीच श्रीमती दास चिल्लायीं। अनु ने आगे बढ़कर 'ज़ख्मी सरदार' को उठाया।

"मामा, नाटक करने में हमारी मदद करेंगे न ?" दीपक ने पूछा।

"ज़रूर, लेकिन मैं पहले अपना काम खत्म कर लूं," प्रेम मामा ने क़हा, "अनु, देर हो रही है। अब हमें रंगशाला की तरफ चलना चाहिए।"

"अभी जाओगे क्या ? अभी-अभी तो आये हो," श्रीमती दास ने कहा।

"तुम्हें तो मालूम ही है कि मैं काम कैसे करता हूँ," भाई ने कहा, "वहाँ मुझे अपने मंच-मैनेजर से मिलना है।"

"हम भी चलें ?" डीडो ने पूछा।

"ज़रूर, क्यों नहीं।"

"मैं...मैं भी..." टप्पो चिल्लाया।

"टप्पो ! नहीं, तुम नहीं जाओगे," टप्पो की अम्माँ ने उसे टोका।

"आने भी दीजिए, बुआ," अनु ने कहा, "मैं उसे सँभाल लूंगी।"

"हमें ज्यादा देर नहीं लगेगी," प्रेम मामा ने कहा, "मैं जरा मंच और प्रकाश-व्यवस्था देखना चाहता हूँ।"

"मैं आपको थियेटर तक छोड़ सकती हूँ," श्रीमती अनवर ने कहा जो काफी देर से चुप बैठी थीं, "मुझे उस तरफ जाना है। करीब एक घंटे बाद मैं वापस लौटूंगी और आपको भी लेती आऊँगी।"

श्रीमती अनवर उन्हें सेंट्रल थियेटर उतार कर आगे चली गयीं। एक मोटे-ताजे सज्जन भाग कर आये और बड़े तपाक से प्रेम मामा से हाथ मिलाया।

"आपसे मिल कर बहुत खुशी हुई," उन्होंने कहा, "आपके स्टेज मैनेजर श्री कातकर अंदर आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।" वे उन सबको खुले बरामदे में ले आये जिसमें दो बड़े दरवाज़े थे। सब अंदर चले गये।

हाल में रोशनी बहुत हल्की थी। कुर्सियों की कतारें खाली पड़ी थीं। एक गाढ़े रंग के भारी परदे से मंच ढका हुआ था।

"परदा उठाओ," अचानक प्रेम मामा ने ज़ोर से कहा।

एक अजीब-सी सरसराहट हाल में फैल गयी और भारी बैंगनी रंग का परदा धीरे-धीरे सरकने लगा।

आश्चर्य से दीपक की साँस रुक गयी। उसके सामने खुला पड़ा मंच था—खामोश और अंधेरा। उसने दौड़ कर सीढ़ियाँ तय कीं और मंच पर आ गया।

"रोशनी दो," प्रेम मामा ने आवाज़ दी।

अचानक मंच प्रकाश से भर गया। खाली मंच पर एक नन्हीं आकृति आकर खड़ी हो गयी थी। वह दीपक था। थियेटर में फैली हल्की रोशनी में उसने झाँकने की कोशिश की।

"शाबाश!" तालियाँ बजाता हुआ डीडो ज़ोर से चिल्लाया। दीपक धन्यवाद देने की मुद्रा में झुका। सभी बच्चों ने हँसते हुए तालियाँ बजायीं।

"मैं...मैं भी..." टप्पो चिल्लाया।

"आओ, सभी आ जाओ," प्रेम मामा ने कहा, "हमें मंच पर हीरो के पास चलना चाहिए।"

अभिनेता का घर

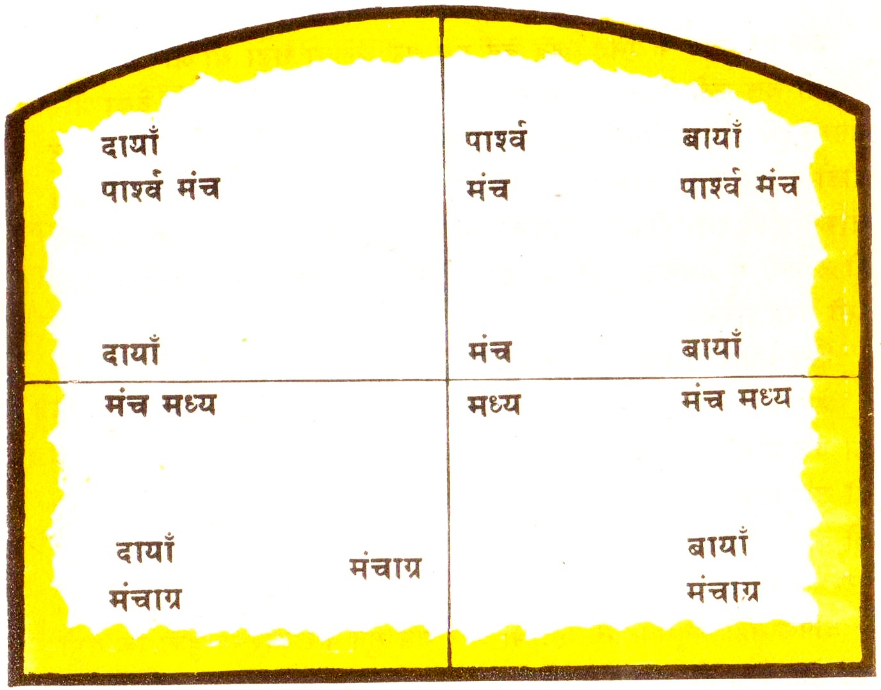
उस एक क्षण के लिए, जब वह मंच पर अकेला खड़ा था और अचानक रोशनी जल उठी थी, दीपक ने सामने विशाल अंधेरे हाल की ओर देखा और उसको हर्ष और अजीब-सी शक्ति का अनुभव हुआ। फिर 'शाबाश' चिल्लाकर डीडो ने उस जादुई जाल को तोड़ दिया। उत्तर में दीपक ने सिर झुका दिया। लेकिन उसी क्षण दीपक ने मन-ही-मन प्रतिज्ञा की—एक दिन वह सचमुच ही रोशनी में जगमगाते मंच पर खड़ा होगा और सचमुच के दर्शकों के आगे इसी तरह झुकेगा।

फिर सब लोग मंच पर चढ़ आये।

प्रेम मामा ने कहा, "अभिनेता का असली घर मंच और नेपथ्य (मंच का वह भाग जो आँखों की ओट रहता है) है। वह जब मंच पर होता है तो उसे लगता है कि वह दुनिया का सब से सुखी आदमी है। जब वह दर्शकों की ओर देखता है और उनकी वाहवाही सुनता है तो उसको उसका असली पुरस्कार मिल जाता है। उसे इससे ज्यादा और कुछ नहीं चाहिए।"

दीपक यही अनुभव कर रहा था और उसे सुन कर आश्चर्य हुआ कि सभी अभिनेता ऐसा ही अनुभव करते हैं।

"लेकिन इस क्षण के आने से पहले," मामा ने कहा, "अभिनेताओं को कस कर मेहनत करनी पड़ती है। पहले मैं तुम्हें मंच की रूपरेखा समझा दूँ। मंच तीन भागों में बँटा है, मध्य मंच, बायाँ मंच तथा दायाँ मंच। यह तीनों भी मध्य, दायें तथा बायें भागों में बँटे हैं। यह विभाजन अभिनेता को नज़र में रखते हुए किया जाता है। अब दिखा कर समझा देता हूँ। दीपक, इधर आओ।"



"मैं भी," अनु की गोद में बैठा टप्पो चिल्लाया।

"ठीक है, टप्पो तुम्हीं पहले आओ। अनु, इसे मंच-मध्य पर खड़ा कर दो।"

अनु ने उसे मंच-मध्य पर खड़ा कर दिया। वह वहाँ गर्व से सिर ऊँचा किये खड़ा था।

"अब दीपक, तुम दायें मंच-मध्य पर खड़े हो जाओ। यानी टप्पो की दायीं तरफ और तुम डीडो, बायें मंच-मध्य पर खड़े हो जाओ।"

दोनों लड़के अपने-अपने स्थान पर खड़े हो गये।

"अब बच्चों, बायें मंचाग्र और दायें मंचाग्र पर खड़े हो जाओ।"

"यह किधर हुआ?" डीडो ने पूछा।

"दर्शकों की ओर।"

दीपक और डीडो दर्शकों की ओर खड़े हो गये।

"पारो तुम कहाँ हो?" प्रेम मामा ने आवाज़ दी।

"मैं इधर हूँ," पारो ने उदास स्वर में कहा।

उसको लग रहा था कि उसे सबने भुला दिया है।

"टप्पो के पीछे खड़ी हो जाओ। नहीं भई, ऐसे नहीं। जितने पीछे जा सकती हो, चली जाओ।"

पारो भाग कर मंच-मध्य पर जितने पीछे जा सकती थी, चली गयी। "दीवार आ गयी, मामा," उसने ऊँचे स्वर से कहा, "मैं और पीछे नहीं जा सकती।" मंच के अंतिम छोर पर एक गोलाकार दीवार थी।

"इस दीवार को गगनिका (साइक्लोरामा) कहते हैं," प्रेम मामा ने समझाया। इस पर रोशनी फेंक कर कमाल के 'प्रभाव' पैदा किये जा सकते हैं जैसे रंग का या छाया का प्रभाव। अब, डीडो! तुम अपनी जगह से दायें पार्श्व-मंच (दायीं ओर ऊपर) चले जाओ।"

डीडो समझ न सका। वह वहीं खड़ा रहा। अनु ने गर्दन हिला कर इशारा किया और वह बायें मंचाग्र से भाग कर दीपक के पीछे खड़ा हो गया।

"दीपक! बायें पार्श्व मंच पर जाओ।"

दीपक भाग कर पारो के बायीं ओर खड़ा हो गया ।

"निर्देशक अपने अभिनेताओं को 'गति' सिखाते समय इसी तरह निर्देश देता है । इसी तरह वह प्रकाश संयोजक को निर्देश देता है । कोई भी अभिनेता अपनी मन-मरज़ी से मंच पर नहीं चल सकता । वह तभी आगे-पीछे जाता है जब आवश्यकता होती है," मामा ने बताया ।

"जब कोई लड़ाई का जोशीला दृश्य आ जाये तो ?" दीपक ने पूछा । वह अभी तक अमरसिंह राठौरवाले नाटक के बारे में सोच रहा था ।

"लड़ाई के दृश्य में भी प्रत्येक 'गति' की योजना सावधानी से की जाती है । यदि हर एक अभिनेता अपनी मरज़ी से मंच पर घूमे-फिरे तो वहाँ ऐसा गड़बड़-झाला मच जायेगा कि दर्शक कुछ समझ नहीं पायेंगे । प्रत्येक अभिनेता को सावधान रहना पड़ता है कि कहीं वह दूसरे अभिनेता को ढक न रहा हो । हम इसे कहते हैं 'आच्छादन' । जब कोई अभिनेता ज़रूरी संवाद बोल रहा हो या आवश्यक 'गति' में हो तो दूसरों को अपने स्थान पर बिना हिले-डुले खड़े रहना चाहिए ताकि दर्शकों का ध्यान न बँटे । संक्षेप में कहूँ तो, दीपक बेटे, हर एक अभिनेता को अपनी टीम का अनुशासित और निःस्वार्थ सदस्य होना चाहिए । अब मैं तुम्हें बाकी मंच-स्थानों के बारे में समझाता हूँ ।"

प्रेम मामा बच्चों को बायीं ओर ले आये जहाँ फलक लगे हुए थे ।

"इस स्थान को 'पार्श्व' कहते हैं । यह दोनों ओर हैं । यह स्थान है तो मंच पर ही लेकिन दर्शकों को दिखायी नहीं देता । यह वह स्थान है जहाँ खड़े होकर अभिनेता उस दृश्य की प्रतीक्षा करते हैं जिसमें उन्हें मंच पर आना होता है । जिन चीज़ों की ज़रूरत मंच पर आगे के दृश्यों में होती हैं उन्हें भी यहीं रखते हैं । इन्हें 'मंच उपकरण' कहते हैं जैसे थैला, छाता वगैरह. . . ।"

"या तलवार ?" डीडो ने बात काटी ।

"हाँ, वह तलवार जिसकी अभिनेता को आगे दृश्य में ज़रूरत पड़ेगी ।"

"वह क्या है ?" पारो ने स्विचों, तारों और हत्थों से भरे एक बोर्ड की ओर इशारा करते हुए पूछा । वहाँ एक ऊँचा स्टूल भी रखा था ।

"यह 'लाइट और डिमर बोर्ड' है ," मामा ने समझाया, "जितनी रोशनियाँ हैं उतने ही यहाँ स्विच हैं ।"

"आप इन हत्थों से क्या करते हैं ?" दीपक ने पूछा ।

"यह हत्थे 'डिमर' कहलाते हैं," प्रेम मामा ने जवाब दिया, "इन्हें ऊपर कर देने से रोशनी बढ़ जाती है और नीचे कर देने से कम हो जाती है । मंच के पीछे आ कर देखो ।"

बच्चे दौड़ कर मंच के पीछे आ गये और बोर्ड को देखने लगे । देखते-देखते टप्पो इतना झुक गया कि अगर अनु उसे न सँभालती तो वह गिर ही जाता ।

मंच की छत इतनी ऊँची थी कि दिखायी तक न देती थी । ऊपर, स्टेज से बहुत ऊँचाई पर, बत्तियों की कई कतारें लगी थीं । आश्चर्य से दीपक का मुँह खुला का खुला रह गया । उसने अपनी ज़िंदगी में इतने सारे बल्ब नहीं देखे थे ।

"रोशनियों की कतार को बल्ली कहते हैं और प्रत्येक बल्ली का नियंत्रण एक ही स्विच से किया जाता है ।"

"ये बड़ी काली रोशनियाँ क्या हैं ?" दीपक ने बड़े काले ढाँचे की तरफ इशारा करते हुए पूछा ।

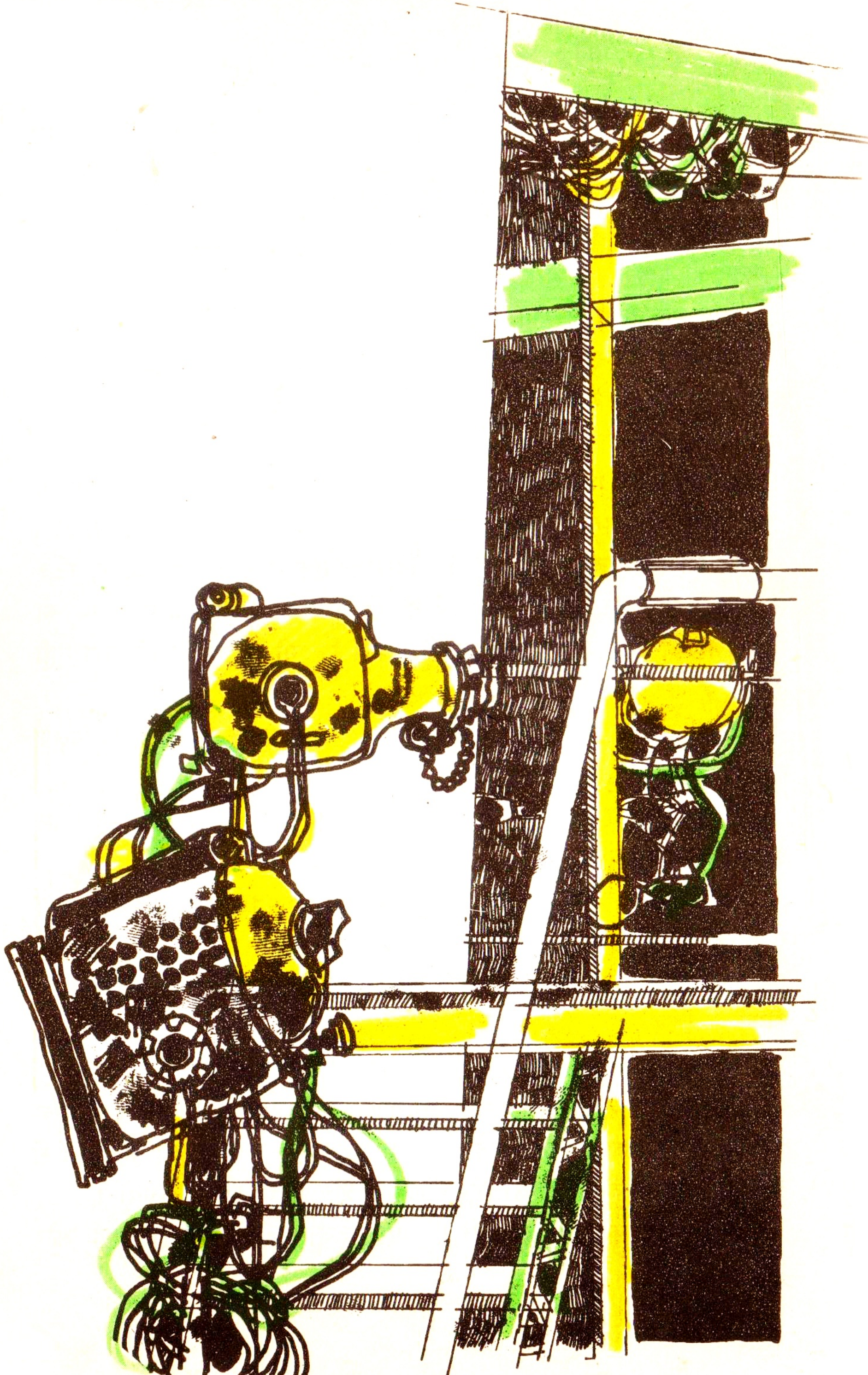
"इन्हें 'स्पाट' कहते हैं । यह काफी तेज रोशनी देता है और मंच के छोटे से हिस्से को भी रोशनी से भर सकता है ।"

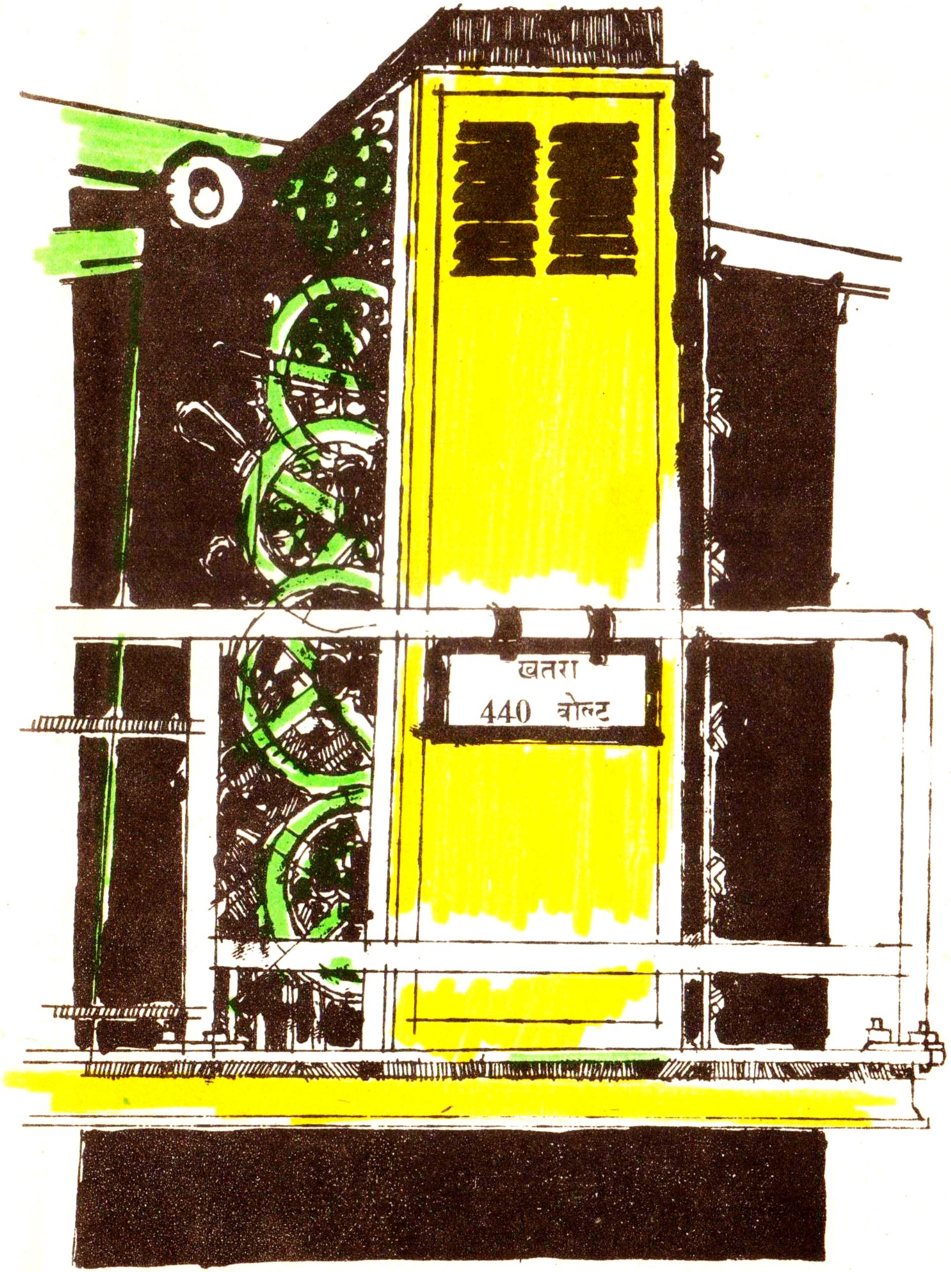
"क्या स्पाट और बल्ली, दोनों के प्रकाश को हल्का किया जा सकता है?" दीपक ने पूछा ।

"ज़रूर । आओ, मैं तुम्हें दिखाऊँ," मामा ने जवाब दिया ।

प्रेम मामा स्विच-बोर्ड (प्रकाश-नियंत्रण) के पास आये । "पहले मैं बीच की बल्ली का प्रकाश हल्का करूँगा," यह कहते हुए उन्होंने हत्थे को धीमे से चलाया और बीच की बल्ली की रोशनी हल्की होती हुई बुझ गयी ।

"अब स्पाट को भी देख लो ।" एक तेज़ रोशनी मंच पर हुई और




खतरा
440 वोल्ट

जैसे-जैसे प्रेम मामा हत्थे को चलाते रहे, प्रकाश कम होता हुआ एकदम गायब हो गया।

अचानक प्रेम मामा ने आवाज़ दी, "कातकर! लाल फलक को नीचे कर सकते हो?"

"जरूर।" रस्सियों और बल्लियों के बीच में से आवाज़ आयी। फिर किसी चीज़ के चरमराने की आवाज़ आयी और धीरे-धीरे लाल फलक नीचे हुआ। मंच आधा ढक गया। फलक दो रस्सियों और बांस के सहारे लटकाया गया था।

अब तुम मंच के आधे हिस्से में दृश्य खेल सकते हो। मामा ने कहा, "इतनी देर में मंचकर्मी (मंच-सज्जा करनेवाले लोग) फलक के पीछे दूसरे दृश्य की तैयारियाँ पूरी कर लेंगे। इसे उठा लो," उन्होंने आवाज़ दी।

फलक धीरे-धीरे ऊपर उठने लगा।

"मैं भी," टप्पो चिल्लाया और अनु की गोद से कूद कर फलक को पकड़ने की कोशिश करने लगा।

"नहीं, ऐसा नहीं करते," अनु ने चिल्ला कर उसको रोका।

"क्या अभिनेता मंचाग्र और पार्श्व मंच पर तैर भी सकता है?" दीपक ने रंगमंच की असली शब्दावली का प्रयोग करते हुए गर्व से कहा।

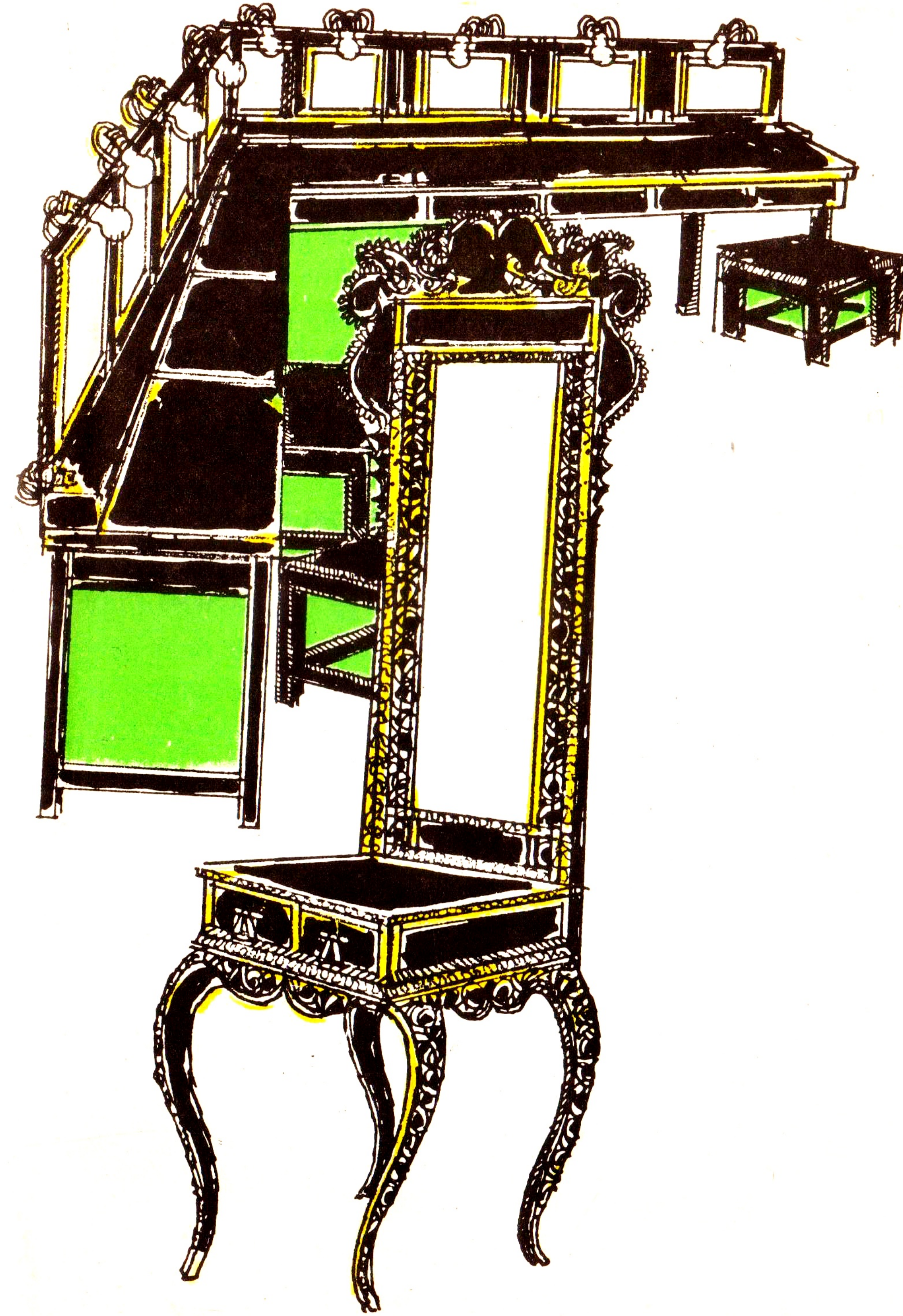
"जरूर। मैंने एक युवक अभिनेता को रस्सियों के सहारे मंच पर झूलते और फिर कलाबाजी खाते हुए मंच पर कूदते देखा है।"

"वाह, कमाल है! मैं भी कोशिश करना चाहता हूँ।"

"मंच पर एक गुप्त दरवाज़ा होता है। उसमें घुसो तो मंच के नीचेवाले कक्ष में पहुँच जाओगे।"

"अच्छा! मंच से गायब होनेवाला दृश्य हो तो यह तरीका बड़ा काम आये!"

वे पार्श्वों से होते हुए गलियारे में आये। वहाँ तीन कमरे थे। एक में संदूक और अलमारियाँ थीं। पोशाकों को रखने का प्रबंध था, इस्त्री करने का प्रबंध था। बाकी दो कमरों में श्रृंगार मेज़ें और बड़े शीशे लगे हुए थे।



"आपने तो कहा था कि ग्रीन रूम में ले चलेंगे लेकिन इन कमरों का रंग तो. . . ?" सफेद दीवारों को देखकर पारो ने निराश होकर कहा।

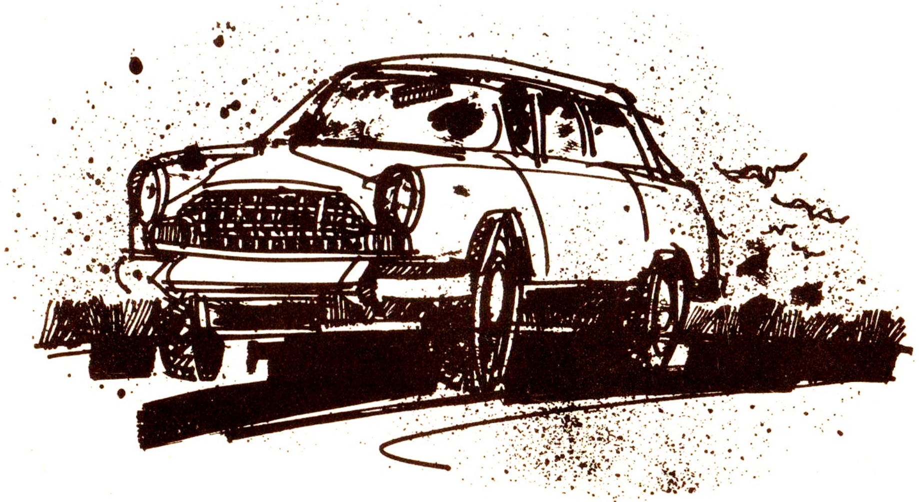
प्रेम मामा ने हँस कर कहा, "ग्रीन रूम का मतलब हरा कमरा नहीं है। ग्रीन रूम का अर्थ है वह स्थान जहाँ अभिनेता तैयार होते हैं और मेक-अप करवाते हैं। इनमें से एक अभिनेताओं के लिए है और दूसरा अभिनेत्रियों के लिए।"

तभी बाहर हार्न सुनायी पड़ा।

"हमारी कार आ गयी," डीडो चिल्लाया।

"आओ फिर," मामा ने कहा, "तुमने अभिनेताओं का घर देख लिया है। अब चलो, अपने घर चलते हैं। कल आकर हम पूर्वाभ्यास (रिहर्सल) देखेंगे।"

वापसी में कार में बैठा दीपक उस दिन के बारे में सोच रहा था जब रंगमंच उसका असली घर होगा।



आरंभ का आरंभ

सुबह सब लोग थियेटर की तरफ जा रहे थे। रास्ते में पारो ने पूछा, "मामा, आप नाटक कैसे करते हैं ?"

"क्या बेकार सवाल पूछा है !" दीपक ने मज़ाक उड़ाते हुए कहा।

"नहीं, नहीं, सवाल बिल्कुल ठीक है," मामा ने कहा, "आओ, शुरू से शुरू करें। सबसे पहले आपके साथ कुछ लोग होने चाहिएं जो रंगमंच में काम करना चाहते हों। सिर्फ वही नहीं जो अभिनय करना चाहते हों, बल्कि और लोग भी जो पोशाक, मेक-अप या मंच-व्यवस्था यानी प्रकाश-व्यवस्था और ध्वनि-प्रभाव-व्यवस्था जैसे कामों में भी रुचि रखते हों। अब आपकी टीम तैयार हो गयी। इसके बाद आपको एक बढ़िया नाटक खोजना होगा।"

"या लिखना होगा ?" डीडो ने टोक कर पूछा।

"लिखना ? यह तो कठिन काम है और समय भी ज्यादा लगता है। नाटक का चुनाव बहुत महत्वपूर्ण है। आप शोक से भरा नाटक भी चुन सकते हैं. . ."

"उसको ट्रैजेडी कहते हैं न ?" दीपक ने पूछा।

"हाँ, या हँसाने वाला नाटक।"

"कामिक ?" पारो ने प्रश्न किया।

"कामिक नहीं, पगली। उसे कहते हैं कामेडी। ठीक कह रहा हूँ न, मामा ?"

"हाँ। नाटक चाहे हँसानेवाला हो या रुलाने वाला, चाहे पुराने ज़माने का हो या आधुनिक, उसमें दर्शकों की दिलचस्पी का ख्याल रखना बहुत ज़रूरी है। नाटक दिलचस्प नहीं हुआ तो दर्शक देखने नहीं आयेंगे। फिर यह भी देखना होगा कि सभी भूमिकाओं या पार्ट के लिए आपके पास अभिनेता हैं या नहीं।"

"इन्हें कहेंगे पात्र," अनु ने टोका ।

"मंडली जुटाओ और निर्देशक चुन लो । तब नाटक का पाठ होगा । कई नाटकों का पाठ करने के बाद नाटक का चुनाव होता है । अभिनेता अपनी मन-पसंद भूमिकाएँ पढ़ सकते हैं । कौन किसका पार्ट करेगा, यह निर्णय हमेशा निर्देशक करता है ।"

"क्या निर्देशक नायक या नायिका से अधिक महत्वपूर्ण होता है, मामा ?"

"नहीं, रंगमंच में सभी समूह भावना से काम करते हैं, सभी का महत्व होता है । लेकिन इनका नेता निर्देशक होता है," मामा ने समझाया, "वह अभिनेताओं को 'गतियाँ' समझाता है और अच्छे से अच्छा अभिनय करने में उनकी मदद करता है ।"

दीपक सोचने लगा कि निर्देशक ही क्यों न बना जाय !

"निर्देशक भी क्या अभिनय कर सकता है ?" उसने पूछा ।

"निर्देशक के लिए ठीक तो यही है कि वह अभिनय न करे । करना पड़ जाय तब बात दूसरी है क्योंकि उसके ज़िम्मे और बहुत से काम होते हैं, जैसे दूसरों के अभिनय को सुधारना यह देखना कि प्रकाश-व्यवस्था, ध्वनि-प्रभाव और वस्त्र-विन्यास की व्यवस्था ठीक है या नहीं; पोशाकें और मेक-अप ठीक हैं या नहीं । मंच-सज्जा ठीक तरीके से की गयी है या नहीं ?"

दीपक ने लंबी साँस ली । टीम का कप्तान होना अच्छा है लेकिन कप्तान अगर खेल में हिस्सा न ले तो फिर मज़ा ही क्या ?

"निर्देशक के बाद टीम में कौन सबसे महत्वपूर्ण होता है ?" उसने पूछा ।

"मंच-प्रबंधक (स्टेज मैनेजर)," मामा का उत्तर सुनकर सबको आश्चर्य हुआ ।

"मंच-प्रबंधक रिहर्सल का प्रबंध करता है । वह देखता है कि अभिनेता अपनी भूमिकाएँ याद कर रहे हैं या नहीं । यह देखना भी उसी का काम है कि पोशाकें और मंच-सज्जा समय पर पूरी हो जायें । हाल मिल गया है या नहीं, टिकट बिक गये हैं या नहीं, यह सब भी उसी के ज़िम्मे है । वह पूरी मंडली

का असली प्रबंधक होता है । वह रंगमंच का सबसे स्वार्थहीन जीव है क्योंकि एक तो वह मंच पर नहीं आता, दूसरे बहुत कम लोग यह जान पाते हैं कि उसका काम कितना महत्वपूर्ण है ।"

दीपक ने मन-ही-मन फैसला कर लिया कि वह मंच-प्रबंधक तो कभी नहीं बनेगा !

"लेकिन आप नाटक करते कैसे हैं ?" पारो ने दुबारा पूछा ।

"अभिनेताओं का चुनाव होते ही रिहर्सल शुरू हो जाता है । अगर नाटक लंबा है तो शुरू में सिर्फ कुछ ही दृश्यों का अभ्यास करते हैं । नाटक अधिकतर तीन भागों में होते हैं, जिन्हें अंक कहते हैं । प्रत्येक अंक में कई दृश्य हो सकते हैं । अगर अभिनेता समझदार हैं और नाटक बढ़िया करना चाहते हैं तो वे अपनी भूमिकाएँ जल्दी याद कर लेते हैं । वे अपनी 'गतियों' को मन में बिठा लेते हैं जो उन्हें निर्देशक ने दी हैं । कठिन दृश्यों का अभ्यास कई-कई बार करना पड़ता है । अभिनेता में धीरज का होना बहुत ज़रूरी है ताकि अपनी भूमिका तो सही कर ही सके, साथ ही दूसरे अभिनेताओं की सहायता भी कर सके ।"

अब दीपक को पता चला कि अभिनेता होना इतना आसान नहीं है जितना उसने समझ रखा था ।

"सबसे महत्वपूर्ण अभिनेता कौन होता है ?" उसने पूछा ।

"एक अच्छी मंडली में सभी अभिनेता समान रूप से महत्वपूर्ण होते हैं । हालाँकि कुछ भूमिकाएँ बड़ी होती हैं, कठिन होती हैं, लेकिन महत्व सभी का एक-सा होता है । अच्छी भूमिकाएँ उन्हीं को दी जाती हैं जिनमें प्रतिभा होती है । दूत का पार्ट हो या बाज़ार के दृश्य में भीड़ के किसी आदमी का, यदि उसको ठीक से सिखाया न गया हो या दृश्य का ठीक तरह से अभ्यास न किया गया हो तो सारा गुड़ गोबर हो जाता है । दीपक, सुनो, प्रेम मामा ने मुस्कराते हुए कहा, "मुख्य अभिनेता या मुख्य अभिनेत्री वही होते हैं जो छोटी भूमिकाएँ करनेवाले अभिनेताओं का पूरा-पूरा ध्यान रखते हैं । इसीलिए अपनी हिंद मंच मंडली में हम इस बात का पूरा ध्यान रखते हैं कि अच्छी भूमिकाएँ बार-

बार कुछ चुने हुए अभिनेताओं को ही न दी जायें। एक अभिनेता किसी नाटक में नायक होगा तो दूसरे में वही एक बूढ़े का पार्ट करेगा और हो सकता है कि तीसरे में वह सिर्फ एक राहगीर बने।"

दीपक शरमा गया। उसने जल्दी से कहा, "मेरा यह मतलब नहीं था कि मैं हमेशा हीरो का पार्ट करूँगा।"

"आप नाटक कैसे करते हैं?" पारो ने फिर पूछा। वह बातचीत का आधा हिस्सा भी नहीं समझ पायी थी।

"सभी दृश्यों का अच्छी तरह अभ्यास हो चुकने के बाद पूरे नाटक का अनेक बार अभ्यास किया जाता है। यदि पोशाकें और मंच-सज्जा तैयार है तो मंच पर ही अभ्यास होता है। थियेटर का किराया ज्यादा होने की वजह से मंच पर एक या दो ही अभ्यास हो पाते हैं। इसे प्रस्तुति-पूर्व (ड्रेस रिहर्सल) कहते हैं। इस समय क्योंकि हम प्रेक्षागृह में ही हैं इसलिए तुम प्रस्तुति-पूर्व देख सकते हो। सब शांति और धीरज से बैठेंगे क्योंकि हो सकता है कि एक ही दृश्य को हमें बार-बार करना पड़े जिससे अभिनेताओं को मंच की आदत पड़ जाये। हमें प्रकाश-व्यवस्था को भी जाँचना होगा।"

"यह अच्छा ही रहा कि हम टप्पो को साथ नहीं लाये नहीं तो वह सभी काम खुद करने के लिए मचलता," अनु ने हँसते हुए कहा।

"उसकी मैं भी...मैं...भी...के मारे नाक में दम है," डीडो ने हँस कर टप्पो की नकल उतारते हुए कहा।

ड्रेस रिहर्सल

वे जब हाल में पहुँचे, तो वहाँ काफी हलचल थी। मंच का परदा उठा हुआ था। काम हो रहा था। लोग आ-जा रहे थे। बढ़ई काम कर रहे थे। मंचकर्मी एक दृश्य की सज्जा में जुटे हुए थे। बत्तियों की जाँच हो रही थी। एक आदमी टेपरिकार्डर चला कर ध्वनि-प्रभावों को सुन रहा था।

"हाल के बीच में चौथी या पांचवीं कतार में बैठो," प्रेम मामा ने बच्चों से कहा, "मैं तो अब काम में लग जाऊँगा, लेकिन अनु तुम्हारे साथ बैठेगी और तुम्हें सब-कुछ समझाती रहेगी।"

दीपक और डीडो अनु के दोनों ओर बैठे और पारो अपने भाई के पास बैठी।

"ठीक! अब सब नेपथ्य में जायें," प्रेम मामा की आवाज़ गूँजी, "कातकर! तैयार हो?"

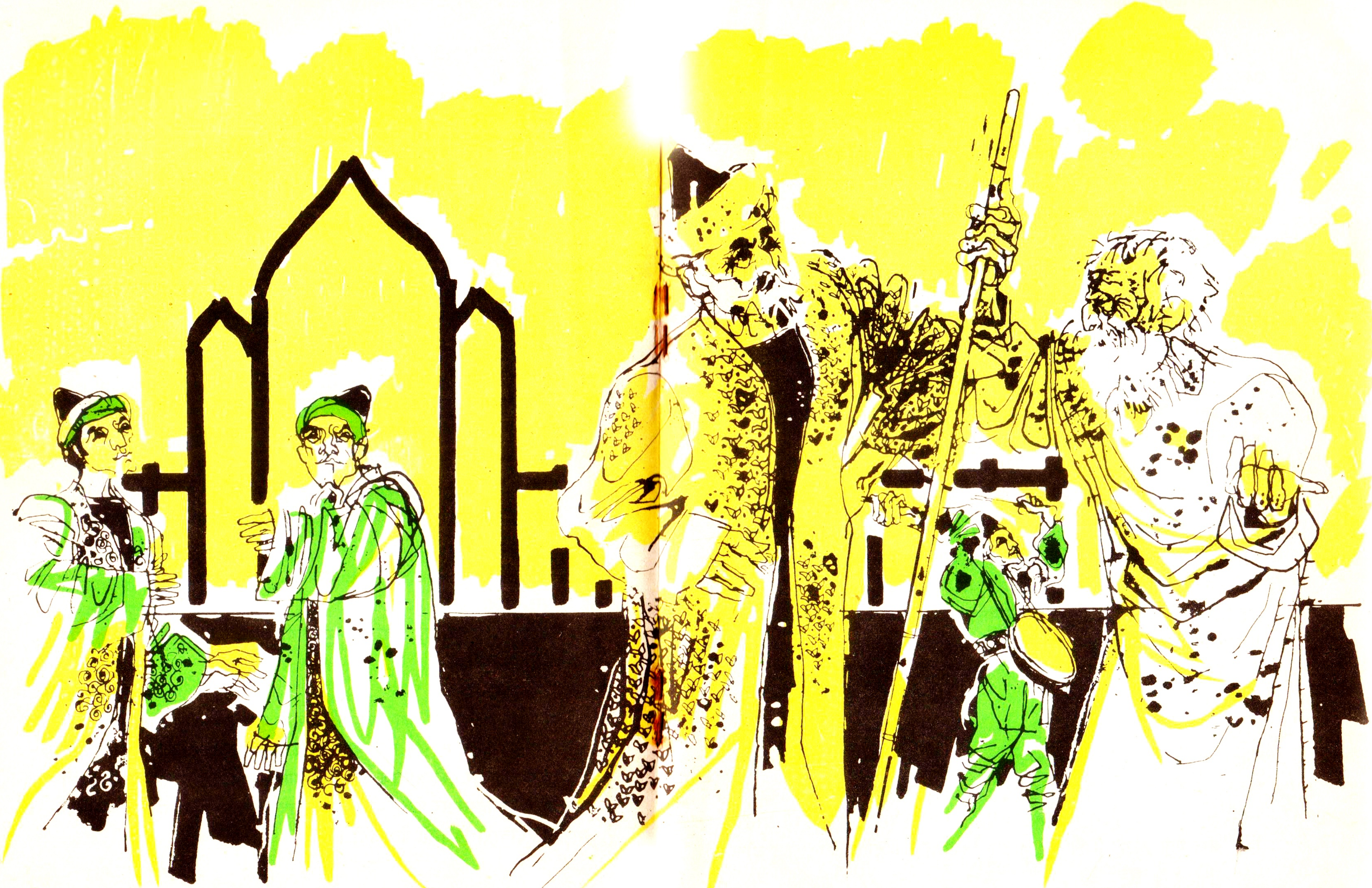
"बिल्कुल," एक आवाज़ कहीं से आयी।

"बत्तियाँ बुझा दो," मामा ने कहा।

सब नेपथ्य में चले गये। बत्तियाँ बुझ गयीं। मंच पर परदा गिर गया और खामोशी छा गयी।

"शुरू करो।"

कहीं दूर से 'अज़ान' की आवाज़ धीमे से शुरू हुई और धीरे-धीरे परदा खुलने लगा। अंधेरे में, मंच पर, मेहराबों के सिर्फ छायाचित्र ही साफ दिखायी पड़ रहे थे। 'अज़ान' की आवाज़ तेज़ होती गयी। साथ-साथ हल्की नीली रोशनी मंच के पिछले हिस्से पर फैल गयी। अब दीवारें, सीढ़ियाँ और किले की मेहराबदार चारदीवारी दिखायी देने लगी।



"देखो, रोशनी से लगता है कि अभी-अभी पौ फटी है," अनु ने फुसफुसा कर कहा, "अज़ान से भी समय का पता चलता है। ध्वनि-प्रभाव से यह पता चलता है कि यह मस्ज़िदों का शहर है। असल में यह शहर दिल्ली है।"

"कातकर!" समां जो बंधा था प्रेम मामा की आवाज़ से टूट गया। "रोशनी को तेज़ी से बढ़ाओ।"

मंच प्रकाश में नहा उठा। बढ़िया पोशाकें पहने बहुत से लोग मंच पर आ गये। कोई कढ़ी हुई अचकन और पगड़ी पहने था तो कोई सलवार, रंगीन कुरता और उसके ऊपर भड़कीली कामदार वास्कट।

"कपड़े कितने बढ़िया हैं," पारो ने फुसफुसा कर कहा, "ऐतिहासिक नाटक होने की वजह से छोटी-छोटी बातों पर भी पूरा ध्यान देना होता है। हम संग्रहालय में भी गये थे यह जानने के लिए कि उस समय के सिपाहियों की तलवारें और ढालें कैसी होती थीं। अफ़ग़ानों के शस्त्र और पोशाक राजपूतों से काफी अलग हैं।"

नाटक देखते हुए बच्चों को लगा कि वे मध्ययुग की दिल्ली में आ गये। उनके सामने थे—सिपाही, शहज़ादे, भिखारी, गुप्तचर, व्यापारी तथा राजा। जो अभिनेता 'तुग़लक' की भूमिका कर रहा था, वह लंबा-चौड़ा और खूबसूरत था। उसकी आवाज़ गहरी और सशक्त थी। बच्चे उसे देख कर चकित भी हुए और खुश भी। जब सिपाही राजमाता को बाजार के चौक में मारने के लिए खींच कर ले जाने लगे तो पारो की चीख निकल गयी।

"क्या सचमुच ऐसा हुआ था?" डीडो ने अपनी बहन को दिलासा देने के लिए अनु से पूछा।

"हाँ, डीडो! सब घटनाएँ ऐतिहासिक हैं। लेकिन नाटककार ने उन्हें इस प्रकार जोड़ा है कि वह अपना दृष्टिकोण सामने रख सके। इसे गिरीश करनाड ने लिखा है। इनका मत यह है कि तुग़लक महान था। उसके सब मित्रों ने उसे धोखा दिया। और तो और, उसकी बेगम ने भी उसको धोखा दिया और यही कारण है कि वह जीवन के आखिरी दिनों में इतना कटु और

अत्याचारी हो गया था।"

तभी प्रेम मामा की आवाज़ आयी, "राजू! स्वर बढ़ाओ।"

"इसका क्या अर्थ है?" दीपक ने पूछा।

"इसका अर्थ यह है कि इस तरह बोलो कि आवाज़ साफ तौर से सुनायी दे और बिना चीखे ऊँचा बोलने की कोशिश करो," अनु ने बताया।

सुलतान सामने आया। वह अकेला था, उदास था और अपने पुराने दोस्त इतिहासकार बरनी को विदा दे रहा था जो उसे छोड़कर चला जा रहा था।

"इन संवादों को दुबारा बोलो," प्रेम मामा ने कहा।

अभिनेताओं ने दृश्य को दुबारा खेलना शुरू किया।

"अगर आवाज़ दर्शकों को न सुनायी दे तो अच्छे अभिनय का कोई फायदा नहीं," अनु ने बताया, "अभिनय का यह पहला पाठ है जो बहुत महत्वपूर्ण है।"



धीरे-धीरे नाटक खत्म होने को आया। दीपक आखिरी दृश्य को देख कर बहुत प्रभावित हुआ जिसमें कंगूरों पर प्रकाश पड़ रहा था, और थका-हारा, बूढ़ा सुलतान, सर झुकाये सीढ़ियों पर अकेला बैठा था। उसके पीछे रोशनी कम होती गयी। अब सुलतान के चारों ओर केवल छाया थी––फिर बिल्कुल अँधेरा हो गया।

"हाल की बत्तियाँ जलाओ," मामा की आवाज़ आयी।

"अवश्य," जाना हुआ उत्तर आया और हाल जगमगा उठा।

"अनु, मैं प्रकाश तथा ध्वनि-प्रभावों की 'क्यू' देखना चाहता हूँ।"

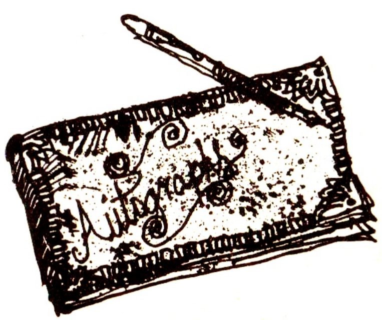
"क्यू ? इसका क्या मतलब ?" दीपक हर चीज को उसी समय समझ लेने को आतुर था। अनु ने बताया कि क्यू का मतलब उन शब्दों से है जिनसे प्रकाश और ध्वनि-संयोजक को संकेत मिलता है कि अब उन्हें यह करना है।

प्रेम मामा ने कहा, "तब तक तुम बच्चों को पीछे स्टेज पर ले जाओ। वे अभिनेताओं से मिल लें।"

"बहुत अच्छा," दीपक खुशी से चिल्लाया, "मेरा तुग़लक से परिचय करवाना, अनु !"

"क्या वह अपने आटोग्राफ देंगे ?" डीडो ने पूछा।

"ज़रूर देंगे," अनु ने कहा, "आओ, चलें।"



परदे के पीछे

मंच पार करके वे सब ग्रीन रूम में पहुँचे। वहाँ नीली साड़ी पहने एक लंबा-चौड़ी महिला ने मुस्करा कर उनका स्वागत किया।

"यह तुम्हारे ममेरे भाई हैं, अनु ?"

"सिर्फ दीपक ही है, सती दीदी," अनु ने उत्तर दिया, "ये इसके दोस्त हैं––परवीन और रफ़ीक़।"

"बच्चों, कोकाकोला पिओगे ?" महिला ने पूछा।

इतने में भारी कदमों की आवाज़ आयी और 'सुलतान मुहम्मद तुग़लक' उनके सामने आ खड़ा हुआ !

"दीदी ! एक कप चाय तो पिलाइए," उसने अपनी पगड़ी उतारते हुए कहा, "हलो, अनु !" बातचीत करते-करते उसने अपनी सुनहरी अचकन भी उतार दी।

"अहमद साहब ! मेरे भइया दीपक से मिलिए। इसे ऐक्टिंग में बहुत दिलचस्पी है। और ये इसके दोस्त हैं––परवीन और रफ़ीक़," अनु ने कहा।

"तुम अभिनेता बनना चाहते हो ? बहुत खूब !" अहमद साहब ने हाथ मिलाते हुए कहा और पारो का सिर थपथपाया।

"जी, अगर आप जैसी ऐक्टिंग कर सकूँ," दीपक ने शरमाते हुए कहा।

"उससे बहुत बढ़िया करोगे," अहमद साहब हँसे और चेहरे पर कोल्ड क्रीम मल कर उसे रूई से पोंछने लगे।

बच्चों ने देखा, उनके चेहरे की रेखाएँ और झुर्रियाँ सब पुंछ गयी थीं। फिर उन्होंने दाढ़ी पर तेल लगाया जिससे सफेद बाल काले हो गये !



"क्या अब दाढ़ी उतार देंगे?" पारो ने पूछा।

"नहीं। मेरी दाढ़ी असली है," अहमद साहब ने जवाब दिया, "लेकिन बरनी अपनी दाढ़ी अभी उतारेंगे, देखना," उन्होंने राजू को आता देख कर कहा। राजू 'बरनी' बना था।

पारो की आँखें आश्चर्य से फैल गयीं जब उसने देखा कि 'बरनी' अपनी दाढ़ी उखाड़ता जा रहा है।

"आप इसे दुबारा कैसे लगायेंगे?" उसने पूछा।

"मेक-अप मैन, देसाई साहब, दुबारा लगा देंगे," राजू ने बताया।

"आप दाढ़ी क्यों नहीं बढ़ा लेते?" डीडो ने पूछा।

"क्योंकि दूसरे नाटक में मैं आजकल के एक नौजवान की भूमिका कर रहा हूँ जिसकी दाढ़ी-मूंछ सफाचट है," राजू ने कहा। जब मेक-अप पुंछ गया तो बच्चों ने देखा कि राजू तो बिल्कुल नौजवान है और अनु से उम्र में कुछ ही बड़ा है।

"ओह! मैंने सोचा था कि आप बूढ़े होंगे। आपकी आवाज़ भी वैसी-ही फटी हुई-सी थी," पारो ने हँसते हुए कहा।

"मुझे खुशी है कि तुमने मुझे बूढ़ा समझा," राजू ने कहा, "लेकिन इतना जान लो कि बूढ़े आदमी की-सी आवाज़ निकालना कोई आसान काम नहीं है। इसीलिए मैं काफी ऊँचा नहीं बोल सका।"

"जी हाँ! मामा ने कहा भी था, स्वर बढ़ाओ। कहा नहीं था?" दीपक बोला।

"कहा तो था। मेरी आवाज़ ठीक से सुनायी दे रही थी, अनु?" राजू ने पूछा।

"हाँ, लेकिन जब आपने दृश्य दुबारा खेला तब।"

"मैं युवकों के सीधे-सादे पार्ट से बूढ़े आदमी का पार्ट करना ज़्यादा पसंद करता हूँ," राजू कहता गया, "असली चुनौती तो उसी में है।"

दीपक ने यह बात गाँठ बाँध ली और तय किया कि जब भी उसे मौका



मिलेगा वह भी बूढ़े आदमी की भूमिका करने की कोशिश करेगा ।

"बेगम कहाँ हैं ? मैं उनसे मिलना चाहती हूँ," पारो ने कहा ।

"वे थक गयी थीं । शायद होटल में आराम करने के लिए चली गयी होंगी ।"

"कोकाकोला लो, बच्चों," सती दीदी ने अंदर आते हुए कहा ।

"राजू, अपने मंच-उपकरण मुझे दे दो । तुम खो दोगे ।"

"यह रहे दीदी," राजू ने कहा और पुस्तक, थैली और छड़ी दे दी ।

"बच्चों ! तुमने नेपथ्य को सरसरी तौर पर देख लिया न ?" प्रेम मामा ने दरवाज़े पर आ कर पूछा ।

"काफी कुछ देख लिया, मामा," दीपक ने कहा, "मंच-सज्जा पसंद आयी । सुंदर है ।"

"हम अपनी मंच-सज्जा बंबई से नहीं ला सके । यह मंच-सज्जा नेशनल स्कूल आफ ड्रामा की है । उन्होंने हाल में हीं यह नाटक खेला था," प्रेम मामा ने उन्हें बताया ।

"क्या वह स्कूल अभिनेताओं के लिए है ?" डीडो ने पूछा ।

"हाँ ।"



"वाह !" दीपक ने खुश होकर कहा ।

"राजू ने अभी बी०ए० किया है । उसको उम्मीद है कि वह अगले सत्र में इस स्कूल में दाखिल हो सकेगा," प्रेम मामा ने बताया ।

दीपक ने पूछा, "अहमद साहब, आप भी इस स्कूल में गये थे ?"

"अपनी किस्मत कहाँ ? जब मैं छोटा था तब ड्रामा के लिए स्कूल नहीं थे । मैं तो शौकिया अभिनय करता रहा हूँ । कालेज में पढ़ाता हूँ और शाम को हिंद मंच के नाटकों में हिस्सा लेता हूँ । समय होता है तो अपने कालेज के ड्रामा क्लब के नाटकों का निर्देशन करता हूँ," अहमद साहब ने बताया । "लेकिन राजू और तुम्हारी पीढ़ी के लोग किस्मतवाले हैं । तुम पेशेवर अभिनेता बन सकते हो ।"

"क्या स्कूल देखोगे, दीपक ?" मामा ने पूछा, "उनकी मंच-सज्जा कल वापस करनी है । डा रेक्टर साहब को धन्यवाद भी देना है । राजू भी स्कूल देखने के लिए चल रहा है ।"

"मैं ज़रूर चलूँगा, मामा," दीपक ने उत्साहित होकर कहा ।

"अब जल्दी होस्टल वापस चलें," प्रेम मामा ने कहा, "खाना खाने के बाद सीधे तीन बजे यहाँ आ जाना है । भूलना नहीं, शाम को साढ़े छः बजे नाटक शुरू होगा ।"

अभिनेताओं के लिए स्कूल

'तुग़लक' को बड़ी सफलता मिली थी। सभी बढ़िया समूह-कार्य और प्रतिभावान अभिनेताओं की प्रशंसा कर रहे थे। खासकर उनकी जिन्होंने 'तुग़लक', 'बेग़म' और 'बरनी' के पार्ट किये थे।

अगले दिन सुबह दीपक तथा डीडो प्रेम मामा के साथ ट्रक पर प्रेक्षागृह गये। रास्ते में उनकी भेंट राजू तथा कातकर साहब से हुई। उन्होंने उखाड़ी हुई मंच-सज्जा को ट्रक पर लादने में मदद की। इसके बाद वे नेशनल स्कूल आफ ड्रामा गये। स्कूल मखमली घास के मैदान से घिरी एक इमारत में था। जैसे ही वे दाखिल हुए एक इकहरे बदन का खूबसूरत नवयुवक उनके पास आया।

"अरे राजू! आओ-आओ। स्कूल में तुम्हारा स्वागत है," उसने कहा।

"हलो, रमेश! अभी से ऐसा मत कहो भाई," राजू ने उत्तर दिया।

"कल शाम को तुम्हें 'बरनी' की भूमिका में देखकर यही लगा कि तुम्हारे चुने जाने में अब कोई शक नहीं। बहुत अच्छा अभिनय था। बधाई!"

"धन्यवाद," राजू ने उत्तर दिया और अपने मित्र से परिचय कराया।

"पहले वर्कशाप चलते हैं जहाँ मंच का यह सारा सामान ले जाना है," रमेश ने कहा।

वह उन्हें एक बड़े कमरे में ले गया। एक आदमी बिजली से चलनेवाले आरे से काम कर रहा था।

"यहाँ हम मंच-सज्जा बनाते हैं," वह शोर को काटती हुई आवाज़ में बोला। डीडो ने एक युवक को कोने में कुछ काम करते देखा।

"वह क्या कर रहा है?" उसने रमेश से पूछा।

"यह राव है, यहीं का विद्यार्थी है। यह उस नाटक की मंच-सज्जा का मॉडल बना रहा है जो हम करने जा रहे हैं। आओ, देखें।"

डीडो मॉडल देखकर आश्चर्यचकित हो गया। मॉडल हल्की लकड़ी से बनाया गया था। कुर्सियाँ, चारपाइयाँ, स्टूल तथा दरवाज़े पैमाने के अनुसार बनाये गये थे। किसी गुड़िया-घर के कमरे-सा लगता था।

"पारो आती तो मज़ा आ जाता। उसे यह बहुत अच्छा लगता। कितना अच्छा हो अगर मुझे भी मॉडल बनाना आ जाये।"

"मेरा तो ख्याल था कि तुम अभिनेता बनाना चाहते हो," राजू ने कहा।

"अभिनेता तो दीपक बनना चाहता है," डीडो ने कहा "मैं अपने पिता की तरह इमारतें बनाऊँगा।"

"शाबाश!" प्रेम मामा ने कहा, "हमें ऐसे वास्तुकारों (भवन-निर्माताओं) की ज़रूरत है जो नाटक तथा अभिनय के बारे में भी जानते हों ताकि थियेटर बढ़िया बन सकें।"

"दीपक को वर्कशाप में भी काम करना पड़ेगा," रमेश ने कहा, "सभी विद्यार्थी मंच-सज्जा का खाका तैयार करते हैं और फिर बनाते हैं। आओ, अब कक्षाओं में चलें।"

रमेश उन्हें उस कक्षा में ले गया जहाँ सब विद्यार्थी अपने सिर के बल खड़े थे। योगासन का अभ्यास हो रहा था। यह योगाभ्यास की क्लास थी। रमेश ने बताया कि आसन करने से शरीर लचकदार होता है, अभिनेता अपनी मांस-पेशियों को ढीला छोड़ सकते हैं। इससे ताकत भी बढ़ती है। दूसरे कमरे से तबले की आवाज़ और घुँघरुओं की झंकार आ रही थी। वहाँ नृत्य की कक्षा चल रही थी।

"यहाँ विद्यार्थी एक लोक-नृत्य सीख रहे हैं," रमेश ने कहा, "नृत्य से अभिनेता को ताल-स्वर का ज्ञान होता है। हमारे कई नाटकों में और विशेषकर लोक-नाटकों में तो नृत्य होता ही है।"

इससे आगेवाले कमरे में दो विद्यार्थी गाने का अभ्यास कर रहे थे।

"हमें संगीत की शिक्षा भी मिलती है। गाने से आवाज़ को बढ़ाने में सहायता होती है।" उसने फिर कहा, "अब हम अपने छोटे हाल में चलते हैं।"

प्रेक्षागृह छोटा और साफ सुथरा था। वे दबे पाँव अंदर गये क्योंकि वहाँ अभिनय की कक्षा चल रही थी।

रमेश ने धीरे से कहा, "विद्यार्थी तत्काल नाटक गढ़ रहे हैं।"

"इसका क्या मतलब है ?" डीडो ने पूछा।

"शिक्षक ने उन्हें एक कहानी दी है। उस पर नाटक गढ़ते जायेंगे और उसे अभिनीत करते जायेंगे। यह मूक अभिनय है। इसका अर्थ है कि वे सिर्फ मुद्रा, गति और चेहरे के भावों से अपनी बात कहते हैं, बोलते नहीं।"

मंच पर एक लड़की तथा दो लड़के थे। लड़के आपस में लड़ रहे थे। लड़की उन्हें छुड़ाने की कोशिश करते हुए बुरी तरह रो रही थी। अचानक एक लड़के का ज़ोरदार वार लड़के के बजाय लड़की को लग गया। लड़की गिर पड़ी। लड़कों ने लड़ना बंद कर दिया और लड़की को होश में लाने की कोशिश करने लगे। लड़के रोये। अब झगड़ा लड़की के शरीर को ले कर था।

"ठीक ! अब यहीं खत्म करो," एक महिला ने कहा जो पहली कतार में बैठी हुई थी। यह अभिनय कला की शिक्षिका थीं। "अब दृश्य के बारे में बातचीत करते हैं और देखते हैं कि कैसे इसे और सुधारा जा सकता है।"

वे जैसे ही उठे, रमेश ने फुसफुसा कर कहा, "अब हम खुले प्रेक्षागृह में चलते हैं।"

"लड़कों को अपने साथ ले चलो, रमेश," प्रेम मामा ने कहा, "इसी बीच मैं डायरेक्टर साहब से मिल आता हूँ।"

खूबसूरत से खुले रंगमंच को देखकर सब के चेहरे खिल उठे।

"इसको बनाने में विद्यार्थियों का भी हाथ रहा है," रमेश ने गर्व से कहा।

"आप और क्या पढ़ते हैं ?" राजू ने पूछा।

"नृत्य, योग, संगीत तथा अभिनय के अलावा हम लोग वस्त्र-विन्यास, मंच-सज्जा आदि सीखते हैं और भारत के तथा पश्चिम के नाटकों का अध्ययन

करते हैं। हम प्राचीन संस्कृत नाटकों का अध्ययन भी करते हैं और आधुनिक नाटकों का भी।"

"संस्कृत में?" दीपक ने इन सब से ज़रा घबरा कर पूछा।

"नहीं, हिंदी में," रमेश मुस्कराया। "विदेशी भाषाओं के नाटकों का हिंदी में अनुवाद किया जाता है।" फिर वह राजू की ओर मुड़ कर बोला, "मैंने निर्देशन का कोर्स लिया है। तुम्हारा खास विषय क्या अभिनय होगा ?"

"हाँ, यदि प्रवेश मिला तो," राजू हँसा।

"मैंने सोचा था, यह सिर्फ अभिनय का स्कूल है," डीडो ने कहा।

"इस स्कूल में रंगमंच संबंधी सभी विषय सिखाये जाते हैं। निर्देशक, अभिनेता, नाट्य-शिल्पी (टेकनीशियन), चाहे जो बनो।"

"मैं तो अभिनेता बनना चाहता हूँ," दीपक ने कहा, "प्रेम मामा ने वापस जाने से पहले हमारे साथ एक नाटक करने का वायदा किया है।"

"जब हो, बताना। मैं ज़रूर देखूंगा," रमेश ने कहा।

"वादा करते हो न ?" दीपक ने हँसते हुए कहा ही था कि मामा वापस आ गये।

तैयारी

अनु बगीचे में बैठी अपने लंबे, घुंघराले बाल सुखाती हुई पुस्तक पढ़ रही थी। हिंद मंच का दूसरा नाटक कल शाम को हो चुका था और इस वजह से वह कुछ थकी हुई भी थी। नाटक बहुत अच्छा हुआ था। लोगों को खूब पसंद आया था। नाटक किशोरों की समस्याओं के बारे में था।

टप्पो पेट के बल लेटा था। वह टाँगें हिलाता हुआ ड्राइँग की कापी में एक चित्र रँग रहा था।

अचानक डीडो तथा दीपक फाटक से दौड़ते हुए आये।

"अनुदी," दीपक की साँस तेज़ी से चल रही थी। वह धम्म से ज़मीन पर बैठ गया। "मामा ने कहा है कि उनके पास एक ऐसा नाटक है जिसे हम उनकी मदद से खेल सकते हैं। मैंने अपने दोस्तों से पार्ट करने के लिए कहा है। क्या आप हमारी निर्देशिका बनेंगी? क्योंकि प्रेम मामा कहते हैं कि हम सबमें आप सबसे ज्यादा जानती हैं नाटक के बारे में और वह कहते हैं कि ज्यादातर काम युवकों को..."

"दीपक, चुप भी हो जाओ। तुम तो मेरे कानों के परदे फाड़ दोगे," अनु ने अनुनय भरे स्वर में कहा। वह उसके लगातार बोलने से घबरा गयी थी।

"और देखो, अगर तुम शब्दों को इस तरह गड्डमड्ड करके बोलोगे तो कभी अभिनेता नहीं बन सकोगे," उसने मज़ाक किया।

"लेकिन आप करेंगी न? वादा कीजिए, अनुदी।"

"वादा किस बात का?"

"यही कि आप हमारे नाटक का निर्देशन करेंगी।"

"कौन-सा नाटक?"

"मैंने अभी तो बताया आपको..." दीपक रुआँसा हो गया।

डीडो बीच में बोल उठा, "दीपक! मैं बताता हूँ। तुम ज्यादा जोश से बोलते हो तो कुछ समझ में नहीं आता कि क्या कहते हो।"

"बात यह है दीदी कि दीपक अमरसिंह राठौर का नाटक करना चाहता था। चूँकि यह नाटक हमारे पास नहीं है इसलिए मामा ने दूसरा नाटक खोजा है। यह नाटक पंचतंत्र की एक कहानी को लेकर लिखा गया है। नाम है—'कृतघ्न मनुष्य'।"

"ओह! मैं जानती हूँ। यह नाटक तो मैं ज़रूर करना चाहूँगी," अनु ने उत्साह से कहा।

"मैं...मैं भी," टप्पो चिल्लाया। उसने खुशी के मारे अपनी रंगीन खड़ियों का डिब्बा परे फेंक दिया।

"हाँ, हाँ, तुम भी...?" अनु ने वादा किया, "लेकिन दीपक, क्या तुम्हारे इतने दोस्त हैं? सभी पार्ट के लिए मिल जायेंगे? तुम्हारे साथ के लड़के दशहरे की छुट्टियों में बाहर नहीं गये होंगे?"

"ज्यादातर यहीं हैं, दीदी। मैं और डीडो सुबह यही पूछताछ कर रहे थे। मैंने उनसे कहा है कि चार बजे यहाँ आ जायें। प्रेम मामा ने कहा है कि हिंद मंच के बाकी अभिनेता वापस चले जायेंगे लेकिन आप और मामा बाकी छुट्टियाँ हमारे साथ ही बितायेंगे। नाटक करने के लिए पंद्रह दिन मिल जायेंगे।"

"नाटक काफी लंबा है," अनु ने कहा, "खैर, छोटा भी किया जा सकता है। लो, बापू आ गये।"

प्रेम मामा नाटक की एक प्रति लेते आये थे। सब से पहला काम यह किया गया कि सबने अपनी-अपनी भूमिकाएँ लिख लीं। अनु तथा प्रेम मामा ने कई दृश्य कम कर दिये जिससे बच्चों को पार्ट याद करने में आसानी हो। फिर दिन भी तो कम थे।

"नाटक कहाँ खेला जायेगा?" अनु ने पूछा।

"बाहर, बगीचे में कर सकते हैं। मैंने अनवर साहब से बात की है। वे अपने दोस्त से बात करेंगे। उनके दोस्त का बगीचा बड़ा है और दूर भी नहा है।"

"अच्छा ! ज़रूर कपूर साहब का घर होगा," डीडो ने कहा, "अनु ! वह बगीचा काफी बड़ा है। बीच में खुला चबूतरा है। सामने घास का मैदान है। हम चबूतरे पर नाटक खेल सकते हैं और दर्शक घास पर बैठेंगे।"

"चबूतरा ज्यादा ऊँचा तो नहीं है ?" अनु ने पूछा।

"नहीं, नहीं। घास के मैदान से दो ही सीढ़ी ऊँचा है।"

"तो ठीक है। प्रकाश-व्यवस्था कैसे होगी, बापू ?" उसने पूछा।

"मेरा ख्याल है दो स्पाट से काम चल जायेगा क्योंकि हम शाम को जल्दी ही नाटक शुरू कर देंगे। मैं थियेटर के अपने मित्र से कह कर स्पाट किराये पर ले लूंगा और दीपक, मेरा विचार है कि मैं मंच-प्रबंधक बनूँ और डीडो मेरा सहायक होगा।"

"बिल्कुल ठीक," लड़कों की ओर से उत्तर आया।

"मेरे विचार से हर एक विभाग का प्रधान कोई बड़ा आदमी हो। लड़के उसके सहायक का काम करें।"

"यह ठीक रहेगा, बापू," अनु बोली, "तुम्हारी अम्मी मदद करेंगी, डीडो ?"

"मैंने अभी-अभी पारो को यह पूछने के लिए भेजा है कि क्या वे पोशाकों का ज़िम्मा लेंगी ? वे कपड़ों की कटाई-सिलाई में बहुत होशियार हैं और बढ़िया कपड़े बनाती हैं। मुझे और पारो को फैन्सी ड्रेस प्रतियोगिता में हमेशा इनाम मिलता है। हम कपड़े कभी नहीं खरीदते। अम्मी डिज़ाइन बनाती हैं, वही सीती भी हैं। पारो को उनके साथ काम कराना बहुत अच्छा लगता है।"

"मैं...मैं भी," टप्पो चिल्लाया।

"टप्पो गड़बड़ मचा कर मदद करेगा," डीडो ने कहा और सब हँस पड़े।

दीपक के घर चार बजे लड़के-लड़कियों का आना शुरू हो गया। सवा चार

बजे इतने बच्चे जमा हो गये थे कि अनु ने फैसला किया कि दरी बिछा दी जाय।

"पहली ज़रुरी बात तो जो मुझे बतानी चाहिए वह यह है," अनु निर्देशक के अंदाज़ में बोल रही थी, "रिहर्सल के लिए सबको समय पर आना होगा। नाटक खेलने के लिए हमारे पास दिन कम हैं। अब एक मिनट भी गँवाना ठीक नहीं। यदि अभ्यास चार बजे है तो आप दस मिनट पहले आ जायें, यह नहीं कि दस मिनट बाद आयें।"

"जो बच्चे देर से आये थे, उन्होंने सिर झुका लिया और एक-दूसरे की ओर कनखियों से देखकर मुस्कराये।

"और जो भी भूमिका मिले, उस पर फालतू बहस न हो। कुछ भूमिकाएँ बड़ी ज़रूर होती हैं लेकिन हर एक भूमिका का महत्व एक-सा है। जिन्हें छोटी भूमिकाएँ मिलेंगी उन्हें थोड़े संवाद याद करने होंगे। यह फ़ायदा है।"

बच्चे हँसे।

"तीसरी बात यह है कि भूमिकाएँ जल्दी याद हो जानी चाहिएँ। स्कूल का काम इन दिनों नहीं है इसलिए तुम सब के पास समय काफी है। किसी को अपने पास बिठा कर कहो कि तुम्हारा पार्ट सुने और प्रवेश-संकेत (क्यू) देता जाय।"

"वह प्रवेश-संकेत क्या चीज़ है ?" एक गोल-मटोल बच्चे ने गोली चूसते हुए पूछा।

"तुम्हारे संवाद से पहलेवाले संवाद के आखिरी शब्द या पंक्ति को प्रवेश-संकेत या क्यू कहते हैं, यानी वे शब्द जिनके बाद तुम्हें अपना संवाद बोलना है। इन्हें याद करना बहुत ज़रूरी है नहीं तो तुम्हें पता ही नहीं चलेगा कि तुम्हें कब बोलना है। असल में जल्दी ही तुम देखोगे कि तुम्हें एक-दूसरे के संवाद याद हो गये हैं। अच्छा, अब खुश हो जाओ। इतने गंभीर मत लगो।"

उनसे थोड़ा-थोड़ा बुलवाने के बाद अनु ने भूमिकाएँ बाँट दीं। दीपक कृतघ्न पुरुष था, डीडो ब्राह्मण। पारो को राजकुमारी की भूमिका मिली। वह शरमा

गयी। वह यह भूमिका नहीं करना चाहती थी, लेकिन डीडो ने कहा, "तुम नाटक में काम करना चाहती थीं, अब नखरा मत करो।"

टप्पो से यह वादा किया गया कि वह बंदर के रूप में थोड़ी देर के लिए मंच पर आयेगा। लेकिन वह बार-बार दूसरों का पाठ करने के लिए मंचवाली जगह पर भाग आता और उसको पकड़ना कठिन हो रहा था।

अब दीपक के घर रोज़ अभ्यास होता। बैठकवाला कमरा छोटा था, पर माँ ने सामान वगैरह उठवा दिया था। अब आधा कमरा खाली हो गया था और मंच का काम दे सकता था।

दूसरे अभ्यास के दिन श्रीमती अनवर ढेर सारे कागज़ लेकर आयीं और उन्हें अनु को दिखाया।

"बापू ! बापू!" अनु ने बड़े उत्साह से अपने पिता को आवाज़ दी, "इधर आ कर देखिए। श्रीमती अनवर, आप तो सचमुच कलाकार हैं। कमाल की डिज़ाइनर हैं। देखिए, पोशाकों के क्या बढ़िया डिज़ाइन बनाये हैं।"

उनके बच्चों को छोड़, बाकी सबको आश्चर्य हुआ। हर एक पात्र का चित्र अलग-अलग कागज़ पर खींचा गया था जिसमें उसकी पोशाक दिखायी गयी थी। चित्र रंगीन थे। कागज़ के एक ओर पिन से उन कपड़ों के नन्हें-नन्हें टुकड़े टंके थे जिनसे वह पोशाक बनायी जानी थी।

"आपको तो पोशाक डिज़ाइनर होना चाहिए," प्रेम मामा ने यह कहते हुए सारे चित्रों को मेज़ पर फैला दिया जिससे कि बच्चे देख सकें। "मेरे अगले नाटक के लिए आप ही वस्त्र-विन्यास कीजिएगा।"

"आप भी कैसी बातें करते हैं," श्रीमती अनवर मुस्करायीं, "अनु ! मैं बच्चों के नाप ले लूँ, जिससे कल कपड़ा खरीद कर काट दूँ।"

"आपकी मदद करने के लिए काफी लोग हैं ?" अनु ने पूछा।

"हाँ ! दीपक की माँ है। एक या दो बड़ी लड़कियाँ हैं जो सुबह काम किया करेंगी। हमारे पास सिलाई की दो मशीनें भी हैं।"

दीपक की संगीत-शिक्षिका अभ्यास देखने आयीं। उन्हें इतना अच्छा लगा



कि वे संगीत देने में सहायता करने को तैयार हो गयीं। कुछ नन्हें अभिनेता इतने शरमीले थे कि कुछ दिनों बाद उनकी भूमिकाएँ दूसरों को देनी पड़ीं।

दीपक तथा डीडो के घर कामकाज की चहल-पहल और शोर-गुल से गूंजते रहते, जैसे मधुमक्खियों के छत्ते।

दीपक को अब पता चला कि नाटक के लिए काम करने में उसका सारा समय लग जाता है, मजा भी खूब आता है। इतना कुछ करने को था कि ऊबने या झगड़ने का समय ही नहीं था। फिर भी मन खराब करनेवाली छोटी-मोटी बातें हो ही गयीं, जैसे एक बार वह अपना संवाद भूल गया था और अनु ने डाँट दिया था या जब उसका कुर्ता बहुत कसा बन गया था। उस बात पर तो पारो ने मुँह फुला लिया था क्योंकि कुर्ते की सीवन उधेड़ने का काम उसकी माँ ने उसको सौंप दिया था। लेकिन ये छोटी बातें थीं। दीपक को लगता था कि वह जिंदगी भर में इतना खुश कभी नहीं था।





वह महान दिवस

जिस दिन नाटक खेला जानेवाला था उस दिन सुबह सब प्रेम मामा के साथ कपूर साहब के घर गये। चबूतरे के चारों ओर फूलों के गमले रखे थे। कुछ पत्तियाँ इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं।

"पहले सारे मंच की सफाई कर लें। इसके सामने से गमले हटा दें वर्ना लोगों को ठीक से दिखायी नहीं देगा।"

"माली कहाँ है?" दीपक ने पूछा।

"उससे क्या काम है?"

"चबूतरे की सफाई कर देगा।"

"हम खुद सफाई कर सकते हैं," मामा ने कहा और कोने में रखी झाड़ू को उठा लिया, "रंगमंच पर हम काम के लिए दूसरों का मुँह नहीं ताकते, हम खुद ही करते हैं।"

"मेरा यह मतलब नहीं था कि मैं नहीं करूँगा," दीपक शरमा कर बोल उठा।

"तुम और डीडो गमलों को हटा कर पीछे सजा दो जिससे आने का रास्ता खुला रहे।"

प्रेम मामा तथा लड़कों ने कुछ ही देर में चबूतरे को साफ कर दिया। इसी समय अनु तथा दीपक की माँ मंच-सज्जा और मंच-उपकरण ले कर आ गयीं। प्रेम मामा के दोस्त स्पाट तथा टेपरिकार्डर ले आये। डीडो ने बत्तियाँ लगाने में उनकी सहायता की।

सारा इंतजाम पूरा हो गया तो सब ने घर जा कर खाना खाया और आराम किया। श्रीमती अनवर तथा पारो कपड़ों पर इस्त्री करने तथा मेक-अप का

सामान जुटाने में लगी रहीं। साढ़े चार बजे सब बच्चे कपूर साहब के घर इकट्ठे होने लगे। नाटक छः बजे शुरू होने को था।

"अनुदी! मेरे और डीडो वाले इस दृश्य का एक रिहर्सल और करवा दीजिए। इसी दृश्य में मैं संवाद भूल जाता हूँ," दीपक ने कहा।

अनु ने उसे भरोसा दिया, "घबराओ मत, तुम अपना पार्ट अच्छा कर रहे हो। थक जाओगे।"

"मेरी अच्छी दीदी..." दीपक ने चिरौरी करते हुए कहा।

"अच्छी बात है, लेकिन सिर्फ एक बार।" अनु मुस्करायी, 'डीडो, आओ।"

दृश्य खेला गया। दीपक एक बार फिर दोहराना चाहता था लेकिन अनु ने साफ-साफ कह दिया कि अब वह बेकार अपने आपको थका रहा है।

दीपक कुर्सी पर धम्म से बैठ गया। उसके दिमाग़ में संवाद चल रहे थे। उसे लग रहा था कि सारे संवाद गड्डमड्ड हो गये हैं और जैसे ही वह मंच पर पहुँचेगा सब कुछ भूल जायेगा। "क्या सभी अभिनेताओं को ऐसा लगता है?" उसने सोचा।

उसने डीडो को बुलाया। वह अपने मेकानो सेट से कोई मॉडल बनाने में व्यस्त था। "तुम्हें संवाद याद हैं? मेरे संवाद तो सारे गड्डमड्ड हो गये हैं।"

"मुझे तो याद हैं," डीडो ने शांत स्वर में कहा, "मैंने अपने संवादों को एक लाख बार दोहराया होगा। अब तो मैं उलट कर भी उन्हें बोल सकता हूँ। बोल कर दिखाऊँ...?"

"नहीं, नहीं," दीपक चिल्लाया," तुम मेरे संवाद और भुला दोगे।"

चार बज गये। सब लोग कपूर साहब के बगीचे की ओर चलने को तैयार हो गये। चबूतरे के साथवाले एक कमरे में श्रीमती अनवर, अनु और लड़कियों ने बच्चों को कपड़े पहनाये। हल्का-सा मेक-अप किया। यह काम छः बजने में बीस मिनट पर खत्म हुआ।

दीपक तैयार हो गया था। उसने अपनी पोशाक पहन ली थी। अचानक उसने पूछा, "डीडो कहाँ है?"

"यहाँ नहीं है ! 'विग' (नकली बाल) माँगने गया था," प्रेम मामा ने कहा। सब चिंतित हो गये। "डीडो के बिना नाटक कैसे शुरू किया जा सकता है ?" पारो को तो रोना ही आ गया।

"रोओ मत, पारो ! इस तरह तुम अपना मेक-अप बिगाड़ लोगी," अनु ने उसको तो डाँटा पर मन ही मन वह भी घबरा रही थी।

तभी दीपक चिल्लाया, "वह आ गया!"

रफ़ीक़ तांगेवाले के साथ अगली सीट पर बैठा हुआ था। तांगा अभी रुका भी नहीं था कि वह कूद पड़ा। "साइकल पंचर हो गयी थी। टैक्सी मिली नहीं," वह हाँफते-हाँफते बोला, "तभी एक तांगा आ निकला। क्या बढ़िया घोड़ा है ! कैसी सरपट चाल चला है !"

"घोड़े की बात छोड़ो," अनु ने झिड़क कर कहा, "अब जल्दी से जाओ और कपड़े पहन लो। गनीमत है कि तुम्हें ज्यादा मेक-अप नहीं करना है।"

दीपक ने चैन की साँस ली। अभी छः बजने में दस मिनट बाकी थे। वह शांत हुआ। उसकी सारी घबराहट चली गयी थी।





"पहले प्रवेश के लिए अपनी-अपनी जगह खड़े हो जाओ," प्रेम मामा ने फुसफुसाकर कहा क्योंकि बाग अब बच्चों के माँ-बाप और दोस्तों से भर गया था। वे सब आपस में बातचीत कर रहे थे।

"मैं दो घंटियाँ बजाऊँगा। पहली छः बजने में पाँच मिनट पर बजेगी। इससे दर्शकों को पता चल जायेगा कि नाटक शुरू होनेवाला है। दूसरी छः बजे, जब नाटक शुरू होगा। अच्छा, गुड लक!"

"धन्यवाद, मामा," सभी बच्चों ने अपना-अपना स्थान ग्रहण करते हुए एक साथ कहा।

दूसरी घंटी बजी। महत्वपूर्ण क्षण आ गया था। नाटक शुरू हुआ!

नाटक एक नेक ब्राह्मण के बारे में था। ब्राह्मणी अपनी गरीबी को लेकर उससे झगड़ती और ताने दिया करती। ब्राह्मण तंग आ गया था। उसने फैसला किया कि वह अपनी किस्मत आज़माने परदेस जायेगा। रास्ते में एक घना जंगल आया। जब वह उसे पार कर रहा था तो उसने सुना कि कोई मदद के लिए पुकार रहा है। उसने देखा कि एक बंदर, एक शेर, एक साँप और एक आदमी कुएँ में गिर गये हैं। ब्राह्मण ने बंदर, शेर और साँप को बाहर निकाला। उन्होंने जान बचाने के लिए उसको बहुत धन्यवाद दिया और वचन दिया कि ज़रूरत पड़ने पर उसकी सहायता करेंगे। उन्होंने ब्राह्मण को चेतावनी दी कि आदमी को मत निकालना क्योंकि वह नीच और बुरा है। लेकिन ब्राह्मण को आदमी पर दया आयी। उसने उसको भी कुएँ से बाहर निकाल दिया। आदमी ने बताया कि वह काशी का सुनार है। उसने वायदा किया कि इस उपकार का मूल्य कभी न कभी ज़रूर चुकायेगा।

एक समय जब ब्राह्मण मुसीबत में था, बंदर ने उसकी सहायता की। जब दूसरी बार मुसीबत में था तो शेर ने उसको एक सोने का हार दिया जो उसे किसी लाश पर मिला था।

हार लेकर ब्राह्मण उसी काशी के सुनार के पास गया। उसे हार देकर उसने कहा कि इसे बेच दो। कृतघ्न सुनार को विश्वास न हुआ कि हार ब्राह्मण



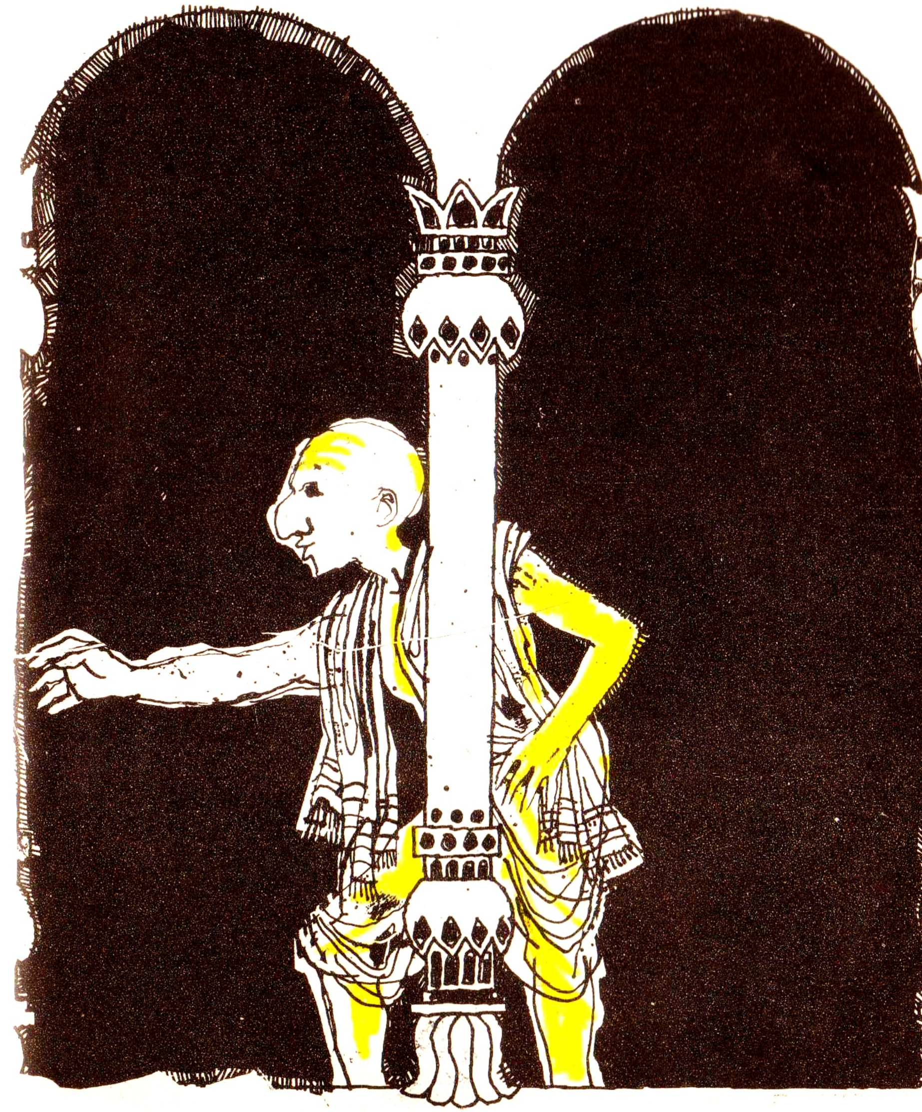
को शेर ने दिया है। सुनार ने पहचान लिया कि हार राजा के लड़के का है जिसकी मृत्यु जंगल में हो गयी थी। उसने राजा के पास जाकर सब हाल कह सुनाया। ब्राह्मण को राजकुमार का हत्यारा मानकर उसे कारागार में डाल दिया गया।

तब साँप आया। उसने ब्राह्मण से कहा कि वह राजा की लड़की को डसेगा, फिर वह बेहोश हो जायेगी। उसे कोई होश में नहीं ला सकेगा।

तब साँप ने उसके कान में फुसफुसाकर राजकुमारी को होश में लाने की तरकीब बतायी।

जैसा साँप ने कहा था वैसा ही हुआ। राजकुमारी को साँप ने काटा। वह बहुत गहरी नींद में सो गयी। उसे कोई न जगा सका। तब ब्राह्मण आया उसने मंत्र पढ़ा और राजकुमारी चट से आँखें खोल कर उठ बैठी। ब्राह्मण ने राजा को बताया कि कृतघ्न सुनार ने उस पर हत्या का झूठा आरोप लगाया था



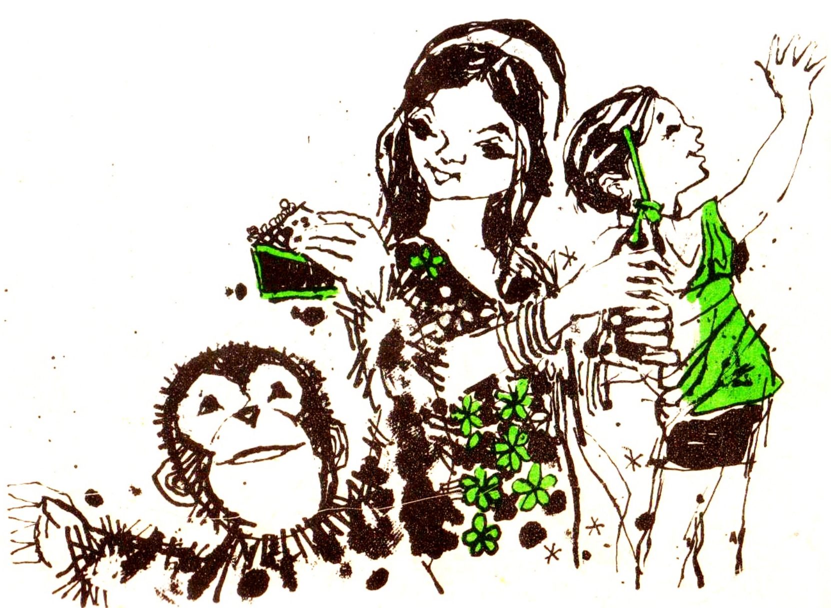


बंदर, शेर तथा साँप गवाही देने के लिए राजदरबार में आये ।

राजा को सुनार पर बेहद क्रोध आया । उसे वह कत्ल करवा देना चाहता था लेकिन दयालु ब्राह्मण ने राजा की चिरौरी-विनती करके उसको क्षमा करवा दिया । सुनार को राज्य से निकाल दिया गया । ब्राह्मण को तो इतने इनाम मिले कि वह उनसे बिल्कुल लद गया और अपने मित्रों बंदर, शेर और साँप के साथ खुशी-खुशी अपनी ब्राह्मणी के पास लौट गया ।

जैसे ही बत्तियाँ बुझीं, तालियाँ गड़गड़ाने लगीं और वाह-वाह और शाबाश आदि प्रशंसा के शब्द गूँजने लगे । निर्देशक के पीछे-पीछे सारे अभिनेता मंच पर आये और एक कतार में खड़े हो गये । दीपक सबके बीच में था । फिर रोशनी हुई, और तालियाँ बजीं, वाह-वाह हुई ! बच्चों ने झुककर दर्शकों को धन्यवाद दिया । "मैं. . .मैं भी. . ." ज़ोर से चिल्लाने की आवाज़ आयी और टप्पो तालियाँ बजाता आगे दौड़ा ।

सब हँस पड़े । नाटक खतम हो गया था । अब दर्शक और अभिनेता आपस



में मिल रहे थे और हँस-बोल रहे थे ।

इतने में श्रीमती कपूर लदी हुई ट्रे लेकर आयीं और बोलीं, "लो, सबके लिए मिठाई और कोकाकोला ।"

"वाह ! वाह !" बच्चे चिल्लाये और उन्होंने श्रीमती कपूर को घेर लिया ।

खाने की मेज़ पर दीपक, दीपक की माँ, अनु तथा प्रेम मामा गंभीरता से बातचीत कर रहे थे । टप्पो अपने बिस्तर पर सो रहा था । मामा और अनु दूसरे दिन बंबई जानेवाले थे ।

"मामा, क्या आप सचमुच सोचते हैं कि मैं अभिनेता बन सकता हूँ ?" दीपक ने मामा से पूछा ।

"अभिनय की प्रतिभा तुम्हारे अंदर है लेकिन अभी तुम्हारी उम्र फैसला करने की नहीं है । क्या पता, स्कूल छोड़ने से पहले या कालेज के दिनों में शायद तुम अपना विचार बदल लो ।"

"क्या यह ठीक फैसला होगा ?" श्रीमती दास ने पूछा ।



"क्यों नहीं ? अभिनेताओं के लिए बहुत रास्ते खुलने वाले हैं। आकाशवाणी और टेलीविज़न तो हैं ही, कई पेशेवर नाटक मंडलियाँ देश के बड़े-बड़े शहरों में काम करेंगी।"

"इस नये अनुभव से तुमने क्या कुछ सीखा ?" अनु ने पूछा।

"मुझे लगा कि अभिनय जितना मैंने सोचा था उससे कहीं ज्यादा मुश्किल और गंभीर काम है। काफी मेहनत का काम है। नाटक के स्कूल में जा कर पता चला कि विद्यार्थी कई देशों के नाटकों का अध्ययन करते हैं। योग करते हैं, गाना और नाच सीखते हैं। मंच-सज्जा और पोशाकें कैसी होंगी, यह सीखते हैं। असल में सही अभिनेता बनने के लिए रंगमंच के बारे में हर एक बात सीखनी चाहिए।"

"यही सबसे अच्छा प्रशिक्षण है," प्रेम मामा ने कहा, "तभी हर एक को दूसरों की समस्याओं और काम के बारे में पता चलता है। मंडली का अर्थ है..."

"...टीम," दीपक तथा अनु बीच में ही बोले।

"...ठीक है," प्रेम मामा हँसे। "सबको मिलजुल कर और अपनी कला के प्रति गहरी आस्था के साथ काम करना चाहिए। तभी हम अपने देश में शानदार रंगमंच-आंदोलन चला सकेंगे।"

"काफी देर हो गयी है," दीपक की माँ ने कहा, "सुबह स्टेशन जाने के लिए जल्दी भी उठना है। अब सोया जाय। दीपक! बाहर की बत्तियाँ बुझा दो।"

दीपक बत्तियाँ बुझाने के लिए उठा। "धत्त तेरे की...फिर वही स्कूल... वही पढ़ाई...वही पुराना सिलसिला..." दीपक ने मुँह बना कर कहा।

"सब अच्छी चीजों का कभी न कभी अंत होता है, छुट्टियों का भी," प्रेम मामा ने हँसते हुए कहा, "यह हमारे सामने है भारत का होनहार अभिनेता, दीपक दास!"

और खुशी-खुशी सब सोने चले गये।

मुद्रक शील प्रिंट-एन-पैक 1/11434 सुभाष पार्क एक्सटेंशन, नवीन शाहदरा दिल्ली 110 032

रु० 8.00

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

